परिचय



सुरेन्द्र मिश्र

श्री सुरेन्द्र मिश्र का नाम हिन्दी साहित्य जगत मे नया नही है, इनके स्फुट लेख एव गीत साप्ताहि हिन्दुस्तान, सरिता, कादम्बिनी मुक्ता, शक्ति पु जाह्नवी मे प्रकाशित होते रहे हैं। जोधपुर प्रकाशित दनिक तरुण राजस्थान, साप्ताहि अभय दूत एव कन्ट्रोलर तथा जयपुर से प्रकाशि जीवन सन्देश का सफलतापूवक सम्पादन किया स्मरण रहे तरुण राजस्थान वह पत्र है, जिसक सम्पादन लोक–नायक जयनारायण व्यास ने उ समय किया था जब अखबार निकालना खत म खाली नहीं था।

श्री सुरेन्द्र मिश्र का जन्म ३–९–४६ को एक कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार म महाकवि देव की भूमि इटावा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इटावा ने डा जाकिर हुसेन जसे महान व्यक्ति को भी दिय है। बाल्य काल मे सरस्वती के सम्पादक श्रीनारा-यण चतुर्वेदी क सम्पक में बीता, जिनसे ही इन्हें साहित्य प्रेरणा मिली।

श्री मिश्र न बी ए ग्वालियर से पास की और एम ए (राजनीति) म राजस्थान विश्व-विद्यालय स।

श्री मिश्र की यह पुस्तक राजस्थान की राजनीति पर लिखा गया एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसमें सिद्धान्त शासन तन्त्र की गति-विधियों का आलोचनात्मक विवेचन है।

सुखाड़िया और

उसके बाद



सुरेन्द्र मिश्र

प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी

को

समर्पित

जिसने राजस्थान को

नई दिशा दिखाने

का प्रयास किया है।

भूमिका

आजादी के बाद राजस्थान को लेकर एक भी पुस्तक सामने नहीं आई है। यहा का बुद्धिजीवी कुम्भकरण की नींद ले रहा है। आवश्यकता थी कि राजस्थान के स्वतत्रता सग्राम का इतिहास, राजस्थान मे काग्रेसी-शासन और राजस्थान मे काग्रेस का एक तर्कसगत इतिहास लिखा जाता।

जान रीड की तरह यहा राजस्थान के एक अध्याय का इतिहास लिखा गया है। उस अध्याय का इतिहास जो राजस्थान को हिला देगा।

पुस्तक पाठको के हाथ मे है, वे ही उस पर निर्णय दें।

सुरेन्द्र मिश्र

जयपुर

विषय-सूची

श्रीमती गाधी ने जिस तत्परता से राजस्थान मे सुखाडिया मन्त्री मण्डल को अपदस्थ किया है, उसकी निष्पति चुनाव के पहले और बाद में बरकत उल्ला खा मन्त्री मण्डल के रूप म हुई है। एक समय के सुखाडिया के साये म पले हुए लोग ही बरकत उल्ला खा मन्त्री मण्डल के रूप म प्रकट हुए हैं। स्वय बरकत उल्ला खा सुखाडिया के साय मे तेरह साल तक रहा है।

प्रश्न होता है कि सत्रह साल के बाद ऐसी कौन सी परिस्थितिया उत्पन्न हो गई थी जिसको लेकर प्रधान मन्त्री को सुखाडिया मन्त्री मण्डल को अपदस्थ करने का अधिकार राजस्थान की जनता पर न छोड अपने हाथ मे लेना पडा। इससे उसके कारणो का पता तो नही चलता परन्तु इससे यह अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी इस नतीजे पर अवश्य पहुँच गई कि राजस्थान की जनता का सामाजिक उद्धार बागला–देश की तरह बिना बाहरी सहायता के नहीं हो सकता।

राजस्थान मे व्यास मन्त्री मण्डल के बाद सुखाडिया मन्त्री मण्डल कुछ इस तरह पालथी मारकर बठ गया था कि उससे राजस्थान का निर्माण न होकर उसका सवनाश होन लगा था। राजस्थान म एक प्रकार का 'मधुमक्खी तत्र' (Beehive–Democracy) या 'खर तत्र पनपने लगा था। इससे राजस्थान म कांग्रेस की साख गिरने लगी थी और यहा एक सामाजिक विस्फोट की स्थिति उत्पन्न होने लगी थी। राजस्थान म उदयपुर और जयपुर जसे शहरो म जनता पर गोलिया चलाई गई और धारा 144 खुलकर लगाई गई। उदयपुर तो 144 धारा का गढ रहा। वहा अराजकता की स्थिति तीव्र रूप से बनी रही।

राजस्थान में सुखाडिया मन्त्री मण्डल की असफलताओ के फलस्वरूप दक्षिण पक्षीय राजनतिक दल प्रभावशाली होने लगे। वाम पक्षीय राजनतिक दल का प्रभाव नही बन सका। इसका कारण राजस्थान की सास्कृतिक धरोहर तो थी ही पर साथ ही सुखाडिया मन्त्री मण्डल की सामाजिक

अवसरवादिता भी थी। 1967 के चुनावों तक राजस्थान में राजनैतिक स्थिति यहां तक पहुँच गई थी कि स्वयं अनुसार कांग्रेस को विधान सभा में बहुमत नहीं मिल सका। कांग्रेस केवल दीपचन्द छगाणी निर्दलीय उम्मीदवार को अपने में मिलाकर ही सत्ता में रह सकी।

इससे सुखाड़िया को इतिहास ने एक बार और अपनी त्रुटियों को सुधारने का अवसर दिया। सुखाड़िया अपनी भूल को नहीं सुधार सका। उसने इस ऐतिहासिक अवसर को खो दिया। राजस्थान का इतिहास पहले की तरह भुठलाये हुए सदर्भों में चलने लगा।

इसलिए इतिहास के भुठलाये अतीत पर दृष्टिपात करना आवश्यक हो गया है, जिसमें राजस्थान के इतिहास के सर्वनाश की कहानी दबी पड़ी है। इसके अवलोकन से पता चलेगा कि इतिहास के ये पृष्ठ स्वर्ण पृष्ठ भी हो सकते थे। इतिहास का निर्धारण अन्य लीकों पर भी हो सकता था।

राजस्थान के राजनैतिक क्षितिज पर अब तक हीरालाल शास्त्री टीकाराम पालीवाल जयनारायण व्यास और मोहनलाल सुखाड़िया ऐतिहासिक नायक के रूप में रहे हैं। इन सब में सुखाड़िया का कार्यकाल सबसे लम्बा और नियामक रहा है। राजस्थान के इतिहास के पिछले सत्रह साल सुखाड़िया के जीवन के समकक्ष रहे हैं। इस काल में पड़ने वाले सुखाड़िया के जीवन के एतिहासिक अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि राजस्थान के उस काल के इतिहास की।

राजस्थान कांग्रेस द्वारा आजादी के बाद एक के बाद एक भूलें की जाती रही हैं। उन भूलों की बारीकी में जाना यहां प्रासंगिक नहीं होगा लेकिन यहां जागीरदारी उन्मूलन के बाद सही नीतियों को नहीं अपनाया गया था यह कहना समीचीन होगा। यहां जागीर उन्मूलन के बाद कृषि व्यवस्था और व्यापार में उपयोग की दृष्टि से सहकारी अर्थ व्यवस्था के आधार पर वैज्ञानिक तालमेल बिठाना चाहिए था उससे चीजों के भावों में उछाल नहीं आता और न पूंजीवादी खातेदारी वर्ग का उद्भव होता। यह वर्ग छोटे किसानों और खेतीहर मजदूरों का शोषण भी नहीं कर पाता। ठीक इंगलैण्ड जैसी स्थिति राजस्थानी तरीके से यहां बनने लगी है वह भी नहीं बन पाती। यहां एक प्रकार के वास्तविक लोकतन्त्र की स्थिति बनती और पूंजीवादी खातेदार नहीं उभरता।

यारुप मौर इगलण्ड* मे 14 वी, 15 वी मौर 16 वा शताब्दी म जसी स्थिति थी वसी हा स्थिति भ्राज गजस्थान म बनन लगी है। अग्रेजा के समय राजस्थान के ग्रामीण समाज म निम्नलिखित चार वग थ।

---

*In England the first form of the farmer is the bailiff himself a serf His position is similar to that of Roman VILLICUS only in the limited sphere of action During the second of the 14th century he is replaced by a farmer whom the landlord provides with seed cattle and implements

His condition is not very different from that of the peasant Only he exploits more wage-labour Soon he becomes a METAYER a half farmer He advances one part of the agricultural stock, the landlrod the other The two devide the total product in proportions determined by contract This form quickly disappears in England, to give place to the farmer proper who makes his own capital bread by employing wage-labourers and pays a part of the surplus product in money or kind to the landlord as rent So long during the 15th Century as the independent peasant and the farm labourer working for himself as well as for wages enriched them selves by their own labourer the circumstances of the farmer and his field of production, were equally mediocre The agricultural revolution which commenced in the last third of the 15th century, and continued during the whole of the 16th excepting however its last decade enriched him just as *speedily* as it improved the mass of the agricultural people

The usurpation of the common lands allowed him to augment greatly this stock of cattle almost without cost whilst they yielded him a richer supply of manure for the tillage of the soil To this was added in the 16th century a very important element At first time the contracts *for* farms ran for a long time often for 90 years The progressive fall in the value of the precious *metals* and therefore of the money brought the farmers the golden fruit *Apart from all* the other circumstances discussed above it lowered wages A portion of the latter was now aded to the profits of the farm The continues rise in the price of the corn wool meat in a word of all agricultural produces swelled the money capital of the farmer without any action on his part whilst the rent be paid being calculated on the old value of money diminished in reality Thus they grew rich at the expense both of their labourers, that England at the end of the 16th century had a class of capitalist farmers rich considering the circumstances of the time –Karl Marx (*Capital Vol I pp 573*)

(1) जागीरदारी वग।

(2) छाग गतीहर किसान। वह जमीन को किराये पर लेकर जिन्दा रहता था या गतीहर मजूरी करके।

(3) जमीन पर काम करने वाला वह गतीहर मजदूर (हाली) जो केवल खेतिहर मजूरी पर जिन्दा रहता था।

(4) ग्रामीण समाज का बहुत बडा वग पशुधन पर जिन्दा रहता था।

अतीत की तरफ दृष्टि डालकर देखें तो पता चलेगा कि मुगल साम्राज्य के पतन के समय अकबर द्वारा प्रतिपादित भूमि सुधार के नियमों का स्थान एक प्रकार की अराजकता ने ले लिया था। अंग्रेजो ने इसी अराजकता का फायदा उठाकर उसे व्यवस्थित रूप दिया था। इसी व्यवस्थापन के फलस्वरूप चार वग बने थे। कृषि-व्यवस्था का यह अद्ध सामन्ती स्वरूप 1784 1793 के इस्तमरारी बन्दोबस्त का ही फल था। आजादी के बाद यही कृषि-व्यवस्था धरोहर के रूप म हम मिली थी।

आजादी के बाद राजस्थान म 1952 से लेकर 1971 तक जो भी भूमि सम्बन्धी अधिनियम* लागू किये गये। उन सबका प्रयोजन एक ओर

---

*(1) राजस्थान भूमि सुधार एव जागीर पुनग्रहण अधिनियम 1952

(2) दी एबोलिशन आफ इ टरमीडिरीज एण्ड लड रिफार्म्स एक्ट 1955 (यह अधिनियम भूतपूव अजमेर म लागू था।)

(3) दी बाम्बे यल्ड टेरीटरीज एण्ड एरियाज (जागीर एबोलिशन) एक्ट 1958। यह अधिनियम केवल आबूरोड पर लागू था।

(4) मध्य भारत एबोलिशन आफ जागीर सम्वत् 1959। यह कवल सुनेल क्षेत्र पर लागू था।

(5) राजस्थान जागीरदारी एव विश्वेदारी समाप्ति अधिनियम 1959। यह अधिनियम वतमान सम्पूण राजस्थान राज्य म लागू था।

(6) राजस्थान भूमि सुधार एव भू-स्वामी परिसम्पत्ति अवाप्ति अधिनियम 1963।

(अ) दी राजस्थान प्रोटेक्शन आफ टीनेंटस आर्डिनेंस, 1949।

(ब) दी राजस्थान प्रोड्यूस रेन्टस रेग्यूलेशन एक्ट 1951।

(स) दी राजस्थान एग्रीकल्चरल रेन्टस कन्ट्रोल एक्ट 1954 (जो कि बाद में बदल कर दी राजस्थान एग्रीकल्चरल एक्ट 1954) हो गया।

(द) दी राजस्थान लड समरी सटिलमट एक्ट 1953।

केवल खातेदारों और राज्य के सीधा सम्बन्ध स्थापित करना था और दूसरी ओर इसी प्रयोजन को ध्यान में रखकर खातेदारी और काश्तकारी की अनेक रूपता को दूर करना रहा है।*

राजस्थान मे जागीरदारी उन्मूलन क बाद ग्रामीण-समाज का निम्नलिखित स्वरूप बनकर सामने आया।

(1) जागीरदारी का स्थान खातेदारी न ल लिया।

(2) छोटे खेतिहर किसान की स्थिति म कोई परिवतन नही आया।

(3) पशुधन पर निभर रहन वाली साधारण ग्रामीण जनता ने अकाल की विभीषिका को देखा।

राजस्थान की अद्ध-सामन्ती अथ व्यवस्था म कोई परिवतन नही आया। राजस्थान मे इसी खातेदार वग ने कांग्रेस को सत्ता मे बनाए रखा है। पू जीवादी खातेदारो ने ही पचायतो, पचायत समितियो जिला-परिषदो और विधानसभा का सदस्य दिए हैं। आज शहरो स आने वाले विधान सभाई सदस्यो को छोडकर अधिकाश विधान सभा के सदस्यो के पास जमीन है और उसके पास जमीन के खातेदरी अधिकार है।

प्रश्न उठ सकता है कि गाँवो म भूमिहीन किसानो न खातेदारी एव खातेदारो के विरुद्ध आवाज क्यों नहीं उठाई ? इस आवाज का नही उठने देन

* The agrarian reforms not only failed to solve the land question through abolition of landlordism and redistribution of the land to the tillers of the soil they did not even comple tely eliminate the semi-feudal exploitation of the peasantry Accordingto the data cited in the 8thRound of National Sample Survey in 1953–54 20 34 per cent of the cultivated land was held under leases The same survay showed that the principal leasors were big landholders While for India as a whole only 12 0 percent of total rural house holds owning land leases or out For the 30 50 acre grade of house hold ownership holdings it was 28 07 per cent and for the over 50 acre grade it was 36 25 per cent It is instructive that these two highest groups which made up altogther 3 31 per cent of the rural households leasing out land accounted for 40 13 per cent of the total leased out area —Grigory kotovsky

का इतिहास, श्रोवर ड्राफ्ट का इतिहास है। श्रकाल के नाम पर समूचे राजस्थान म जो 92 करोड रुपया पानी की तरह बहाया गया है उसम यह हासी वग राज्याश्रित हो गया। बांसवाडा डूगरपुर म पूरा आदिवासी समाज कई वर्षों तक राज्य काय करता रहा है। इस वग के दबाव क कारण कई राजकीय योजनाओं को हरा फेरा गया है।

इसका नतीजा यह हुआ है कि गावो म एक विशिष्ट वग-स्वातेश्वरी वाला वग सम्पन्न हुआ। यदि राजस्थान का नेतृत्व सुखाडिया के हाथो म न होकर जागरूक जन नेता के हाथ मे होता तो ग्रामीण समाज म ऐसी विषम सामाजिक स्थिति नही आती। राजस्थान म ही नही स्वय भारतवष के अन्य राज्यो म भी यही हुआ।

राजस्थान मे सुखाडिया का नेतत्व क्यों पनप पाया, इसका उत्तर दायित्व कांग्रेस पर है। एक समय था जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महात्मा गाधी, राजगोपालाचारी राजेन्द्र प्रसाद मौलाना अब्दुल कलाम आजाद गोविन्द वल्लभ पत और बी सी राय के नेतत्व म गांधीवादी विचारधारा के नाये म पू जीवाद को खुली छूट देना चाहती थी। बाद म प जवाहरलाल के नेतत्व म पू जीवादी गाधीवाद और समाजवाद की तीन धाराए एक साथ बहने लगी। पू जीवादी पक्ष और समाजवादी पक्ष दोनो उभर कर सामने आए। मोहनलाल सुखाडिया इसी समय की पू जीवादी पक्ष की उपज है। जयनारायण व्यास जो गाधीवादी युग का प्रतीक था पू जीवादी पक्ष के सामन पिट गया। नेहरू न सोचा था कि कांग्रेस म इन दोना पक्षो को खुली छूट देने से समाज वादी पक्ष स्वय पू जीवादी पक्ष को दबोच देगा। लेकिन हुआ इसके विपरीत ही। राजस्थान मे पू जीवादी पक्ष तो पनपा, और उसने विशुद्ध पू जीवाद को भी नही आने दिया। उसने मिली जुली अद्ध सामन्ती यवस्था को प्रश्रय दिया।

श्रीमती इन्दिरा गाधी इस प्रक्रिया को पहचान गई। उसने देखा कि कांग्रेस के विरोध मे दक्षिण पक्षीय राजनतिक दल तो पनप रहे हैं पर स्वय कांग्रेस म प्रतिक्रियावादियो की सख्या खतरे के रूप में बढ रही है। इन्दिरा गाधी न कांग्रेस म पू जीवाद को खुली छूट देने वाले पक्ष के विरुद्ध जहाद छेड दिया और उसे हर स्तर पर खदेडना प्रारम्भ कर दिया।

राजस्थान म नेहरू के उदारवाद के नेतत्व मे सुखाडिया के साये में पू जीवादी पक्ष घनीभूत होने लगा था। नेहरू ने जिस प्रकार विदेशो से ऋण

लाकर भारत को सभाव्य राजनतिक विस्फोट स बचाया, ठीक उसी प्रकार सुखाड़िया न 92 करोड़ ग्रोवर ड्राफ्ट के माध्यम से राजस्थान की राजनीति पर अपना वचस्व बनाए रखा।

इसा पू जीवादी नतत्व ने राजस्थान म एक अनोख प्रकार का लड-खडाता पू जीवाद पनपाया है। उसने राजस्थान के छ शहरा—जयपुर सवाई माधापुर कोटा, उदयपुर, भीलवाडा ग्रौर भरतपुर म अपनी जडे जमाई। राजस्थान के ग्रौद्योगिक विकास का इतिहास इन्ही छ शहरों का इतिहास है। लेकिन इन छ शहरा म उपकारक (सहायक) उद्योग धधे नही पनप सके। इसलिए इन उद्योग ध धो से राजस्थान में वह सामाजिक परिवतन न ग्रा सका जो पुराने ग्रार्थिक सम्बन्धा को नया ग्राधार दे सकता। ग्रसम्पृक्त ग्रौद्योगीकरण राजस्थान में ग्राया।

उदाहरण के लिए कोटा मे भारतीय पू जी ने ही ग्रौद्योगिक प्रतिष्ठान खोले। इसलिए इनके द्वारा उत्पादित माल के विनियय का लाभ भी इसी वग का मिला। राजस्थान को इसस कोई लाभ नही हुग्रा। भारतीय पू जी राजस्थान म ग्राइ, बिजली का उपयोग किया, कच्चा माल बाहर स लिया, माल पदा किया ग्रौर बाहर ही उस नया दिया। यही कोटा का ग्रौद्योगीकरण है।

कोटा के ग्रलावा उदयपुर चित्तौड ग्रौर सवाई माधोपुर मे इसी प्रकार का सीमट उद्योग ग्राया। राजस्थान का ग्रपना मूल व्यवसाय—कपास, उन, मू गफली ग्रादि पिछडा हुग्रा रह गया।

राजस्थान के गावो ग्रौर शहरो में जो सामाजिक व्यवस्था उभरने लगी थी वह किहा ग्रर्थो मे समाजवादी नही थी। यदि समाजवाद का ग्रथ बड उद्योग धधो का राज्य के ग्रधिकार मे ले लेना है, तो सडक यातायात जस उद्योग को समूच राजस्थान म लागू न करना कहा तक उचित है। ऐसा केवल सुखाडिया क कारण ही नही हो सका। वह नहीं चाहता था कि कतिपय सडक यातायात क रूट व्यक्तिगत पू जीपतियों के हाथ स राज्य क हाथ मे ग्राए। इसमे उसको राजनतिक प्रयाजनवाद दिखाई दिया।

इस तरह काग्रेस म पनप रहे राजनतिक नेताग्रा न देखा कि जब राजकीय स्तर पर पू जीवाद का बढावा दिया जा रहा है तो व हर उद्योग को ग्रपने निजी लाभ के लिए क्या न काम म ल। हर राजनेता धन बटोरने मे

लग गया। कोई तानदार बन गया तो कोई छोटे मोटे उद्योग का मालिक और कोई भ्रष्टाचार का अधिपति। हर मन्त्री वाजिब व गर वाजिब तरीके से सम्पत्ति अर्जित करने लगा। बात यहा तक बिगड़ गई कि मन्त्री तबादले और पदोन्नति म पस लाने लग। सुखाडिया मन्त्री मण्डल के एक मन्त्री का नाम दिन के प्रकाश की तरह उभर कर सामने आया। बात यहा तक पहुच गई कि बरकत उल्ला खा द्वारा लगभग 180 डाक्टरो का उक्त मन्त्री द्वारा किये गये तबादलो को निरस्त करना पड़ा। राज्य के विशिष्ट विभागो म पुलिस स्वास्थ्य परिवार-नियोजन आबकारी ट्रासपोट, पी०डब्ल्यू०डी० आदि में भ्रष्टाचार जमकर चल पडा। अकाल राहत भी इस भ्रष्टाचार की चपट से नही बच सका। अकाल म भ्रष्टाचार खुल कर चला।

सुखाडिया के शासन काल म नाथद्वारा काण्ड और बडी सादडी सोना काण्ड उभर कर सामने आये। केवल सुखाडिया ही ऐसे काडो का दोषी नही था। उसके मन्त्री मण्डल के समूचे मन्त्री धन जुटाने म लगे हुए थ।

राजस्थान म धीरे-धीरे वह समय आ गया जब राजस्थान का राज्य चोरो भ्रष्टाचारियो शराबियो दुराचारियो, खूनियो, डाकूओ और जाने कस 2 लोगो के हाथ म चला आया। उपरोक्त दिये गये विशेषण कवल गालियो का दूसरा रूप नही है बल्कि पतित लोगो क चरित्रो को व्यवहृत करने की सक्षम अभिव्यक्ति हैं।

जमनी*मे हिटलर के समय जसी स्थिति थी वसी ही स्थिति राजस्थान मे उत्पन्न हो गई।

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख नायक श्री मोहनलाल सुखाडिया के चारो ओर ऐसे लोगो का जमघट जम गया था जो इतिहास म बेमिसाल थे। उनम से अधिकाश व्यक्ति अपराध ग्रथि से ग्रवस्थित थे। जब वे जन सभाओ मे जन बठको म बोलत थे तो लगता था कि उनका मानस मानसिक बीमारी से ग्रसित है।

Germany is ruled today by drug addicts, murders thieves forgerers and moral decadents These are not mere random terms of abuse they describe the commonly recognised characters of most of the chief leaders of the Nazi movement (*The Nation*, *New York August 2 1932*)

राजस्था की राजनीति म सुखाडिया कभी भी दूसरे नम्बर का नेता नही रहा। वह मेवाड की राजनीति का नगण्य कायकर्त्ता रहा सुखाडिया मन्त्री मण्डल के समूचे मन्त्रियों म से श्री हरिदेव जोशी और श्री मथुरादास माथुर को छोडकर एक भी ऐसा व्यक्ति नही था जो राजस्थान की राजनीति से उभरा हो। श्री हरिदेव जोशी को श्री गौरीशंकर उपाध्याय क निधन से महत्वपूर्ण बनने का अवसर मिला था। उसी तरह श्री जयनारायण व्यास के निधन स मथुरादास माथुर को महत्वपूर्ण राजनेता बनने का अवसर मिला। नई राजनीति क सदभ मे इन दोना राजनेताओ का स्वरूप परिवतन हो चुका था। मथुरादास माथुर ने तो यहा तक अपना स्वरूप बदल लिया था कि उसके व्यक्तित्व म प्रगतिशीलता गाधीवादिता समाजवादिता और लोकतान्त्रिकता नाम की कोई चीज नही रह गई थी। उसके चारा ओर ऐसे अवसरवादी लोगो की भीड लग गई थी जो राजनीति की वैचारिक धरोहर से अनभिज्ञ थे। मथुरादास माथुर, जिसम राजस्थान का उद्धारक बनने की क्षमता थी, वह राजस्थान की राजनीति का कमजोर व्यक्ति बन बैठा। अभिनय करना उसके जीवन का प्रमुख अङ्ग बन बन गया। इसके विपरीत श्री हरिदेव जोशी ने व्यक्तिगत लाभ के बावजूद बासवाडा म काग्रेस की साख का बढाया है। आज भी वह अपनी इस योग्यता के कारण ही राजनतिक वचस्व बनाये हुये है। राजस्थान म काग्रेस राज–नीतिज्ञों के आवश्यक यस्थ स्वाथ स्थापित हो गये। सुखाडिया प्रगतिशील पथ स हट गया।

सुखाडिया ने 1953 म कुम्भाराम के नेतत्व वाले जाट गुट और जयपुर जिले के विधान सभाइ सदस्यो को साथ लेकर राजस्थान के शीष नेता श्री जयनारायण व्यास को पदच्युत किया। तब स सुखाडिया राजस्थान क एकमात्र निर्विरोध नता के रूप म प्रकट हुए हैं।

श्री मोहनलाल सुखाडिया को न तो वचारिक राजनीति का ज्ञान था और न उसम सामाजिक क्रान्ति लाने का क्षमता थी। उनका प्रभाव क्षेत्र ऐसा नही था। उनके राजनतिक सत्ता हथियाने के तरीके मे और व्यक्तित्व में परिवतन आया। वे राजस्थान क प्रथम स्तर के नता बन गए।

श्री सुखाडिया को लगा कि राजस्थान जैसे पिछड़ प्रदेश में राज्य की कल हर निर्माण और प्रभाव के लिए नियामक होती है। उस माओ चे तु ग का यह सूत्र अनजान म हाथ लग गया कि 'क्रान्ति हमेशा बन्दूक की नाल स टपकती है।" सुखाडिया माओ नही था। फिर भी सुखाडिया ने राज्य रूपी

यन्त्र की चाल को अपने अधिकार में रखकर राजनैतिक और प्रशासनिक तौर पर अवसरवादी पिट्ठुओं को इकट्ठा कर लिया। प्रशासनिक स्तर पर उसने जन सेवा आयोग को अपने हाथ की कठपुतली बनाया। प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयां रही लेकिन शुद्ध ही समय में सुखाडिया ने राज्य की कल को जबरदस्त तरीके से अपने हाथ में ले लिया। मुख्य सचिव से लेकर प्रत्येक विभागाध्यक्ष उसका पिट्ठू ही रह सकता था। राजनैतिक तौर पर सुखाडिया ने जिला स्तर पर तहसील स्तर पर योजनाबद्ध रूप से राजस्थान के नेताओं को अपने अधिकार में ले लिया। राजस्थान के जाट नेताओं से उसका पूरी तरह तालमेल न बैठ सका जो अन्त में उसकी गिरावट के कारण बने। राजस्थान में जाट नेतृत्व बहुत चाहते हुए भी उसे उखाड नहीं सका। सुखाडिया को यदि अपने हाल पर छोड दिया जाता तो यह किसी की ताकत नहीं थी कि कांग्रेसी हुकूमत के रहते 2 उसे कोई उखाड फेंकता।

सुखाडिया अपने पिट्ठुओं को भूमि और अन्य प्रकार के आर्थिक लाभ देता गया। स्कूल और अस्पताल खोलने के प्रलोभन का फायदा सुखाडिया ने खुलकर उठाया। वह सब प्रयोजनों के लिए अधिनायक बन गया। राजस्थान में राजनैतिक अधिनायकवाद पनपने लगा। सुखाडिया के नजदीक रहने वाला राजनेता आधुनिक मुगलिया वसीयत संजोकर अपने क्षेत्र का अधिनेता बना।

सुखाडिया इस तरह राजस्थान का एकमात्र नेता बन गया। अब उसने अपने बारे में प्रशस्ति-स्मारिकाएं राजकीय विज्ञापनों के सहारे निकलवानी प्रारम्भ कर दी। राजस्थान के साप्ताहिक और दैनिक पत्रों में भी यही गान चलने लगा। कई पत्र ऐसे थे जो पत्र के एक ही अंक में सुखाडिया के तीन तीन ब्लाक प्रकाशित करने लगे। कुछ मनचलों ने पैसा कमाने की दृष्टि से सुखाडिया को 'गौरव पुरुष' कह डाला और उसी आशय को लेकर एक स्मारिका निकाल डाली। उनके हर जन्म दिवस पर कवितागान होता और भाषण बाजी होती। पत्रकारों को सरकारी विज्ञापनों के रूप में धन मिलता। सुखाडिया ने प्रशस्ति गान की मेवाडी परम्परा को बीसवीं शताब्दि में चालू रखा।

सुखाडिया राजनैतिक तौर पर इतना सशक्त होते हुए भी उसके मन में एक प्रकार का भय बना हुआ था। उसे डर था कि कहीं उसका मुख्य मन्त्री पद चला नहीं जाय। इस डर में वह देवी की पूजा करने लगा। चित्तौड की देवी को वह येन केन प्रकारेण पूजने लगा। वह देवी का मन्दिर जो कभी एकान्त में पडा हुआ था उभर कर सार्वजनिक महत्व का मन्दिर बन गया।

यही सुखाडिया की घमनिर्पेक्षता थी। सुखाडिया को जो भय था, उसका उदात्तिकरण इस रूप म हुआ। उसे राज्य की बागडोर अनायास ही बिना किसी सघष के मिल गई थी। सुखाडिया को लगा कि ऐसा भगवान की कृपा से ही हुआ है। कोई नियति उसके पीछे है। वह धार्मिक नियतिवाद का शिकार हो गया।

सुखाडिया अच्छी तरह जानता था कि वह हर नागरिक को सभी तरह की सुविधा नही दिला सकता। इसलिए उसने राजस्थान के महत्वपूरण पत्रकारो को आर्थिक और आवास की सुविधाए देना आरम्भ कर दी। इसस राजस्थान म एक घटिया प्रकार के पत्रकारो की भीड तयार हो गई। वे सामाजिक आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं दे न्यूजप्रिंट कोटा की तरफ और सरकारी विज्ञापनो की तरफ अपना ध्यान देने लगे। पत्र के विज्ञापन की सख्या पर चाटड एकाउटेट की मोहर लगाकर, वे जरूरत से ज्यादा न्यूज प्रिंट लेने लगे और उसे ब्लेक म बेचकर पसा कमाने लगे।

राजस्थान सरकार न कहने का राजस्थान विज्ञापन नियम और राजस्थान प्रमाणीकरण नियम भी बनाये लेकिन मन्त्रियो ने जिस रूप म उन नियमो का सचालन किया उससे पत्रकार जगत मे एक प्रकार की अवसर वादिता घर गई। इन नियमो के अन्तगत पत्रकारो को रेल-यात्रा और बस यात्रा की सुविधा दी गई। लेकिन प्रमाणीकरण और पत्रों के वर्गीकरण मे जिस राजनतिक अवसरवादिता को तूल दिया गया उससे घटिया पत्रकारिता ही पनप सकी। समूचे राजस्थान म श्रमजीवी पत्रकार के रूप मे तो योग्य व्यक्ति पनपने लग, लेकिन पत्रो के मालिक के रूप म अनपढ और चापलूस लोग आने लगे। पत्रकारो को प्राथमिकता से स्कूटर, प्लाट और कार दी जाने लगी। शराब का दौर भी इनमे खूब चलता। दिल्ली से प्रकाशित पत्र आर्गेनाइजर' न इस शराब पिलाने की प्रवृति का खुलकर भण्डा फोड किया है। राजस्थान म वज्ञानिक राजनीतिक की समझ पत्रकार–जगत से गायब हो गई। बडे पत्रो ने इस प्रवृति को मामूली तौर पर दर्शाया। राजस्थान के स्थानीय पत्रकारो को छोडिये दिल्ली से प्रकाशित होने वाले प्रतिनिधि भी अवसरवादी बन गये दक्षिण भारत स प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी के एक दनिक पत्र–हिन्दू क जयपुर स्थित सवाद दाता ने सुखाडिया को लेकर अंग्रेजी म एक पुस्तक सुखाडिया की प्रशस्ति म लिखी, जिसकी कीमत रु 32 रखी गई और जिसकी खरीद कहा जाता है राज्य सरकार ने की। इसी आशय की एक पुस्तक रिसर्जेंट राजस्थान' श्री एस एम रामेश्वर द्वारा राज्य सरकार द्वारा

लिखाई गई। कलकत्ते से इसी प्रकार का एक प्रकाशन निकाला गया। पत्रकारों की फौज अन्त तक यह नहीं समझ सकी कि सुखाड़िया पदत्याग के बाद वापस नहीं आ रहा है।

राजस्थान में आज पत्रकारों की एक ऐसी घटिया पीढ़ी तैयार हो गई है, जो राजस्थान में पनप रहे लोकतन्त्र के लिए खतरा है। आज आवश्यकता इन पत्रकारों को मिलने वाली सुविधाओं की जाँच निष्पक्ष पत्रकारों द्वारा की जाने की है। बात राजस्थान तक ही सीमित नहीं है। भारत प्रसिद्ध विचारक स्व एम एन राय के साथी बम्बई उच्च न्यायालय के रिटायर्ड जज ने अभी हाल में यह माग की है कि सरकार द्वारा मिलने वाली सुविधाओं की जाच 'प्रेस काउंसिल आफ इण्डिया' द्वारा की जानी चाहिये। दिल्ली के पत्रों के प्रतिनिधियों में ढीलापन का पता इसी बात से लगता है कि उन्होंने एक जुट होकर 1972 के चुनावों में सियारों की तरह अपने कालमों में लिखा कि कांग्रेस को बहुमत नहीं मिलेगा और मध्यावधि चुनाव होंगे। आज स्थिति यह है कि राजस्थान की कांग्रेस यदि राजस्थान के सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए कोई आंदोलन चलाना चाहे तो यह 'प्रेस' किसी भी तरह उसका साथ नहीं देगा। पत्रकार पूरी तरह सुखाड़िया के शिकंजे मे फंस गया था। सुखाड़िया पद त्याग के बाद 'टाईम्स आफ इण्डिया' के जयपुर स्थित कार्यालय प्रतिनिधि श्री टी एन कौल ने अपना प्रशंसनीय रोल अदा किया है। वह एक अकेला पत्रकार है जो एक जाज्वल्यमान सितारे की तरह अमावस्या के अंधेरे में जब तब दिशा निर्देशन कर रहा है। राजस्थान में मेवाड़ी और अकबरी परम्परा में महाराणा भोपालसिंह ब्राड गुलामों की एक फौज तैयार हो गई है।

पत्रकारों के बाद सुखाड़िया ने विचारकों और बुद्धिजीवियों की खबर ली। राजस्थान में केवल साहित्य के बल पर जिन्दे रहने वाले कुछ ही साहित्यकार बचे हैं। केवल श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, स्वतन्त्र साहित्यकार के रूप में जिन्दा रहा सका है। शिक्षा विभाग की पुस्तक खरीद की नीति ने अच्छे साहित्यकारों और विचारकों को राजस्थान में नहीं पनपने दिया है।

राजस्थान की साहित्य अकादमियां जिनसे कुछ आशा लगाई जा सकती थी, सुखाड़िया ने उन्हें जानबूझ कर अकादमस का बाग' नहीं रहने दिया है। उन्हें सुखाड़िया का बाड़ा बना दिया गया है जहां साहित्य रूपी पशुधन सुखाड़िया की शरण में विचरने लगा। उदयपुर स्थित साहित्य

अकादमी चारणीय परम्पराओ को ही प्रश्रय दे सकी है। इसकी निष्पति महाकवि सूर्यमल मिश्रण के पुनरोद्धार के रूप मे हुई है और बूंदी मे उस भुठलाय हुए युग के प्रतीक की मूर्ति को विस्थापित किया गया। राजस्थान की बौद्धिक विरासत पर इसका कुप्रभाव पडा है। जयपुर मे चाद बिहारीलाल सबा' को उठाया गया। सुखाडिया ने अपने चारों ओर एक अकबरी दरबार खडा कर दिया।

राजनतिक स्तर पर सुखाडिया राजस्थान की राजनीति पर हावी हो गया। राजस्थान म विधान सभाई विरोध का उभार आया, लेकिन वह विरोध विधान सभा तक ही सीमित रहा। जनमन का सम्बल उसे नही मिल सका। दक्षिण पक्षीय विधान सभाई विरोध का ऐसा एकागीय स्वरूप समयान्तर म वाम-पक्षीय विचारधारा का ग्वा बठा है।

1967 के आम चुनावो मे काग्रेस की विधान सभाई स्थिति मे जो अन्तर आया उस पर हम प्रकाश डाल चुके हैं। तब विधान सभाई सदस्य को सत्ता सोने की चिड़िया नजर आने लगी। काग्रेस के कमजोर पड जान क कारण विधान सभा सदस्यो की निजी माग बढने लगी। सुखाडिया अपनी कुर्सी का जमाये रखने के लिए कतिपय विधान सभा सदस्या को रियायतें देता गया। रियायत देने का यह सिलसिला इतनी तजी से चला कि राजस्थान की योजनाएँ विधान सभा सदस्या की चाह की अभिव्यक्ति बन गई। बात यहाँ तक बढ गई कि सरकारी नौकरा का तबादला और पदोन्नति विधान सभा सदस्यो की इच्छा मात्र हो गई। हर सरकारी नौकर विधान सभा सदस्य का मुँह जोहने लगा और हर विधान सभा सदस्य अपने काम के लिए मत्री का मुँह टापता। पैसे खाकर काम कराने की नीति चल पडी। राजस्थान का काइ काग्रेसी नेता इस प्रवृति से नही बच पाया। इसस राजस्थान के स्तर पर काग्रेस नेताओं की शाख गिर गई। एक भी ऐसा राजनेता नही बच रहा, जिसका प्रभाव राजस्थान व्यापी हो। जिला स्तर पर भी कोई काँग्रेसी नेता नही रहा। स्वय मत्री पद से हटते ही उसका प्रभाव समाप्त हो जाता। राजनतिक तौर पर सभी राजनतिक नेता नपुसक हो गये।

सुखाडिया का नेतृत्व भी मत्ता के कारण बना रहा। अन्दर ही अन्दर काग्रेस म कई गुट—जाट ग्रुप दामोदर व्यास का गुट और कई छोटे मोट गुट—बन गय। लेकिन बिल्ली के गले म घटी कौन बाधे?

राजस्थान म गगानगर बीकानर, चुरू अलवर, जयपुर जोधपुर और कोटा ऐसे जिले हैं जहां कांग्रेसी नेताओं का प्रभाव केवल सुखाडिया क नजदीक रहने के कारण रहा है। सुखाडिया का साथ छोड़ने पर उसकी वही दुर्गति होगी, जो एक साधारण नागरिक की हो रही है।

राजस्थान की राजनीति सिसकते सिसकते भाई भतीजावाद और जातिवाद पर आकर अटक गई है। हर स्तर पर इसी के साये म राजस्थान की राजनीति पनप रही है। राजस्थान की राजनीति का राजनीतिकरण (Politicisation) जातिवादी हो गया है।

इस राजनीति ने राजस्थान में विकास को अवरुद्ध किया है। राजस्थान की राजनीति के बहुमुखी खिंचाव के कारण विभिन्न शहरो का विकास विषम गति से हुआ है। कोई शहर बहुत फायदा उठा सका है तो कोई शहर कुछ भी फायदा नहीं उठा सका है। राजस्थान म ऐसे कई शहर रह हैं जो अभी भी मध्य युगीन सामाजिक आर्थिक व्यवस्था से ऊपर नहीं उठ सके ह।

राजस्थान म तीन पचवर्षीय योजनाए भी राजस्थान को आधुनिक जामा नही पहना सकी हैं। इससे प्राचीन, रूढ़, और साम ती सस्कृति नय रूप मे बनी और विकसित हुई है। एक समय था जब अकबर ने राजस्थान के हर राजा महाराजा नरेशों को लडकियो स विवाह कर अपना स बन्ध समृवे राजपुताने से एक दामाद का सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। उसी आधार पर उसने मीना बाजार की परम्पराओ को प्रभावित किया। योरुपीय इतिहास मे नेपालियन ने भी राजकीय घरानो से विवाह कर अपन वचस्व का कायम रखा। सुखाडिया इस ऐतिहासिक प्रवत्ति का पुनस्थापन नही कर सका लेकिन सुखाडिया और उसके मन्त्रियो क रगीलेपन ने अवश्य दरबारी रूप लिया यह कहा जा सकता है।

इस दरबारी रगीलेपन की पहली अभिव्यक्ति इनके बाल बच्चों की शादियो म दिखाई दी। उन शादियो म जिस भव्यता को शान शौकत को और दरबारी मुजरे को प्रश्रय दिया गया उसमे न तो गाधीवाद की सादगी थी और न समाजवाद की आधुनिकता। साधारण जनता इन शादियों को दरबारो द्वारा की गई शादियो से तुलना कर गाधीजी के रामराज्य के स्वरूप को सशकीय दृष्टि से देखन लगी। लोगो को आशा थी कि अपने आप

को गाधीवादी कहने वाले कम से कम सत्तारुढ कांग्रेसी शादी विवाह के मामले मे सादगी को अवश्य तरजीह देंगे।

बात केवल शादी विवाह तक ही सीमित नही थी। जनता को सुखाडिया और उनके मन्त्रियो के व्यक्तिगत चरित्र पर सशय होने लगा। जयपुर से प्रकाशित एक दैनिक पत्र ने सुखाडिया को लेकर एक स्त्री पत्रकार के सम्बन्ध म जो रोमान्टिक रिपोर्ताज दिया था उससे लाग आश्चय चकित हो उठे। इसी प्रकार की कई दास्तानें दबी आवाज स अनक मन्त्रियो के बारे मे चलती रही हैं। सबसे आश्चयजनक बात तो यह रही कि सुखाडिया ने कही पर भी इस रिपोताज का प्रतिवाद नहीं किया और न ही उस पत्र क खिलाफ कानूनी कायवाही की।

सुखाडिया मत्री मडल के एक कतिपय मत्री न तो यहा तक रवया बदल लिया कि वह अपनी रातें महफिल और मुजरा म गुजारता। इन मुजरा म कइ बार जिलाधीश पत्रकार, अधिशासी अभियता और राजपत्रित अधिकारी उपस्थित रहत। वे इन मेहफिला और मुजरों में पट्रोल डालने का काम करत।

इसलिए श्रीमती इदिरा गांधी न जब सुखाडिया मन्त्रीमडल को अपदस्थ किया तो राजस्थान की जनता न एक सुख की लम्बी सास ली। ऐसा करके श्रीमती इन्दिरा गाधी ने राजस्थान म एक सामाजिक उद्धारक का काम किया जिससे बागला देश की जनता की तरह राजस्थान की जनता भी उस सत्त काय को नही भूल सकेगी।

सुखाडिया मन्त्रीमडल के हटने से राजस्थान म नये समाज के बनन की सम्भाविकता बनी है। इन्दिरा गाधी के साये मे बना नया कांग्रेसी नेतृत्व इस सम्भाविकता का पूरा फायदा उठा सकता है।

यहा यह कहना अनुचित नही होगा कि सुखाडिया मन्त्रीमडल को नगा करक जनता के सामने खडा करन का जो सत्काय विरोधी दला ने किया है, वह प्रशसनीय है। यदि विधान सभा म यह आलोचना नही होती एक के बाद एक कांग्रेसी मत्री का पर्दाफाश नही किया जाता तो श्रीमती इन्दिरा का ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं हाता।

पिछल सत्रह सालो म सुखाडिया ने राज्य की कल (State) और राजस्थान की राजनीति को अपने काम म लेन म जिस चतुरता का प्रदशन

किया है उससे वह योग्य समझा जाने लगा है। किसी भी व्यक्ति की योग्यता की कसौटी इस बात से नहीं नापी जानी चाहिए कि कोई व्यक्ति समाज पर कितना हावी हो सकता है वह अपने प्रतिस्पर्धियों और प्रतिद्वन्द्वियों को चुन चुन कर समाप्त करता है शासन सूत्र का उपयोग कैसे अपने लिए करता है और किस निपुणता के साथ दमन और अनुशमन का दौर चला सकता है। बल्कि किसी भी व्यक्ति की योग्यता को इस आधार पर नापा जाना चाहिए कि वह समाज के लिए कैसी खुली धरती का निर्माण होने में योग देता है और ऊँचा आकाश पा सकने की समाज की इकाइयों में सामर्थ्य भरता है। ऐसे अधिनायक व्यक्ति ही समाज के शत्रु होते हैं जिन्हें शक्तियों द्वारा उखाड़ फेंकना होता है। राजस्थान में यह श्रेय श्रीमती इन्दिरा गांधी को मिला है।

सुखाड़िया एक अनोखे प्रकार की अधिनायकवादी राजनीति वाला व्यक्ति था। उसे भारत की बदलती राजनीति का कोई भान नहीं था। वह राजस्थान की राजनीति की हाथी दांत की दीवारों में सोता रहा। श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में भारतीय स्तर पर कांग्रेसी पूँजीवादी नेतृत्व को जब खुली चुनौती दी जा रही थी तब सुखाड़िया उसके महत्व को नहीं पहिचान सका। वह चूक कर बैठा। उसकी यह चूक एक ऐतिहासिक चूक थी। इतिहास ने सुखाड़िया को अपनी धुरी से अलग कर दिया। बाद में सुखाड़िया ने श्रीमती इन्दिरा गांधी से अपना तालमेल बिठाने का भरसक प्रयत्न किया। सुखाड़िया भूल गया कि वह मूलतः पूंजीवाद का विश्वासी है जबकि इन्दिरा गांधी मूलतः प्रजातन्त्रवादी। पूंजीवादी अधिनायकवाद प्रजातन्त्र के सामने नहीं चल सकेगा इतिहास इसका साक्षी है। स्वयं स्तालिन हिटलर के आक्रमण का सफल विरोध इसी समाजवादी प्रजातन्त्र के कारण कर सका था।

सुखाड़िया को पद त्याग करना पड़ा। सही बात तो यह है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में खुले पूंजीवाद के विरोध में श्रीमती इन्दिरा गांधी का नेतृत्व उभर रहा था। उसी ने सुखाड़िया को पद त्याग के लिए मजबूर किया। चाहे फिर सुखाड़िया ने जनता को धोखा देने के लिये आत्मा की आवाज का ही पद त्याग के लिए सहारा क्यों नहीं लिया हो

राजस्थान में यह राजनैतिक प्रत्युत्क्षेपण (Coup d etat) आकस्मिक रूप से नहीं आया। कोई बुद्धिजीवी इसका अनुमान नहीं लगा सका। जनता जैसे नींद के झोंके में पकड़ ली गई हो। यही कारण था कि सुखाड़िया का विदाई समारोह इतना भव्य हुआ। सही बात तो यह थी कि वह सुखाड़िया का विदाई समारोह न होकर सुखाड़िया का जनाजा था उसका वाटरलू था।

उसके एक राज्य मत्राणी न इस स्वागत को जनाजा के नाम से ग्रभिहित किया था, जिसे बाद में उसने नकार दिया।

इसलिए जब बरकत उल्ला खा ने राजस्थान के मुख्य मत्री पद को सम्भाला तो वह उसके लिए फूलो की सेज नही थी। श्रीमती इन्दिरा गाधी का प्रभाव कई दिना तक चल सकता है। लेकिन राजस्थान में प्रजातन्त्र के लिए ग्रावश्यक है कि यहां नई राजनीति को ग्राश्रय दिया जाय। केवल थोथी ग्रौर नाटकीय राजनीति से काम नहीं चलगा।

मुख्य मत्री पद सम्भालते ही श्री बरकत उल्ला खा ने राजनतिक स्तर पर तीन घोपणाए की है—

1 मैं भ्रष्टाचार को मिटा दूंगा या स्वय मिट जाऊँगा।
2 शहरी सम्पत्ति की सीमा बाध कर ग्रावास की समस्या का हल करूंगा।
3 जयपुर शहर की समस्याग्रों का हल एक साल म कर दूंगा।

ग्राज राजस्थान को ईमानदार प्रशासन की महती ग्रावश्यकता है। लकिन वही एसा न हो कि भ्रष्टाचार समाप्त होने की बजाय ईमानदारी ममाप्त हो जाय। भ्रष्टाचार का मिटना एक थोथा नारा बन कर रह जाय। इस सब के लिए सामाजिक व्यवस्था को बदलना होगा ग्रौर नौकरशाही में ग्रामूलचूल परिवतन करना होगा। स्वय काग्रेस विधान सभा सदस्यों के दृष्टिकाण को बदलना होगा।

सुखाडिया न 92 करोड रुपया का ग्रोवर ड्राफ्ट राजस्थान के सिर पर बोझ के रूप म छोडा है। क्या राजस्थान सरकार बडे उद्योगों को राज्य क नियत्रण में लेकर उस ग्रोवर ड्राफ्ट को चुकाने की ग्रोर कदम उठायेगी? श्री बरकत उल्ला खा उदयपुर क रॉक फास्फेट (जिस ग्रभी एक निजी उद्योगपति को दे रखा है) को इस ऋण के उतारने म काम मे ले सके? साधारण जनता का इस राक-फास्फेट को निजी उद्योगपति को दे देने के पीछे भ्रष्टाचार नजर ग्रा रहा है। एसा 'दि टाईम्स ग्राफ इण्डिया' का कहना है।

सुखाडिया काल के समय राजस्थान मे कई धधों में पूजीपतियों का एकाधिकार फला ग्रौर फूला है। राजस्थान का सिनेमा उद्योग इसका जीता जागता उदाहरण है। इस उद्योग की प्रदशन विधा पर केवल तीन या चार पूजीपतियों का एकाधिकार है। स्वयं उदयपुर मे उसपर एक ही उद्योगपति का

एकाधिकार है। सेन्ट्रल गिरि सर्विस एसोसियेशन भागीरथ प्रयास करके पर गया है कि वहाँ यह एकाधिकार टूटे। एसोसियेशन ने इस सम्बन्ध म नियम भी बनाये है लेकिन इस सम्बन्ध म अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

इसी प्रकार की स्थिति अन्य उद्योगों म भी बन रही है।

राजस्थान कांग्रेस का संगठनात्मक स्तर पर सुधार करना होगा। उसे प्रजातान्त्रिक बनाना होगा। अब तक चली आ रही अधिनायकशाही प्रवृत्ति को मिटाना होगा। ऊपर से टुकड़े डालने की परम्परा को बन्द करना होगा। इस क्रम में श्री बरकत उल्ला खां के लिए नई समस्याएं उत्पन्न करेगा। क्योंकि कांग्रेस म रूप-परिवर्तन का विरोध कांग्रेस के स्वार्थ-स्वार्थ करेंगे।

भारत म अन्य प्रान्तों की तरह राजस्थान म भी राजनीति का आधार जातिवाद रहा है। चाहे इस जातिवाद का स्वरूप हिन्दु जातिवाद रहा हो या मुस्लिम-जातिवाद और या अन्य किसी प्रकार का जातिवाद रहा हो। राजस्थान म जातिवाद के आधार पर हर जाति का ऊपरी वर्ग जाट रावत गूजर मीना पनपा है। सुखाड़िया ने अब तक उसी ऊपरी वर्ग के लोगों को विशेष कर जाटों को आपस म सहाय रखा है। जोधपुर म श्री नाथूराम मिर्धा और श्री परसराम मदेरणा अलग २ नेतृत्व देकर जाटों म दरार पैदा कर रहे हैं। गंगानगर बीकानेर, चुरू सीकर और झुंझुनू के जाट अब त० श्री कुम्भा राम के नेतृत्व म रहे हैं। उनका एक तबका सुखाड़िया के साथ भी रहा है। श्री बरकत उल्ला खां को ऐसे सभी प्रकार जातिवाद से ऊपर उठ कर एक प्रजातान्त्रिक नेतृत्व देना होगा? लेकिन 1972 के आम चुनावों म जोधपुर नगर को छोड़ कर तिजारा जा कर चुनाव लड़ना श्री बरकत उल्ला खां की मजबूरी को प्रकट करता है।

आज राजस्थान को नये नेतृत्व की आवश्यकता है। राजस्थान को विकासशील स्थिति से विकसित स्थिति म लाना है। सुखाड़िया के कार्यकलापों से सबक लेकर यदि बरकत उल्ला खां ने समाज को सही नेतृत्व नहीं दिया तो वह अकेला पड़ जायेगा और श्रीमती इन्दिरा गांधी भी उसकी मदद नहीं कर सकेगी। साधारण जनता भी हमेशा के लिए कांग्रेस का साथ नहीं दे पायेगी। यह बात हर राजनीति के विद्यार्थी को ध्यान म रखनी होगी।

श्री बरकत उल्ला खां राजस्थान को सही नेतृत्व देने म कहाँ तक सफल होंगे समय ही इसका जवाब देगा।

एक आन्तरिक प्रेरणा

'मैंने मुख्य मंत्री पद से त्याग पत्र देने का निर्णय' एक आन्तरिक प्रेरणा के कारण लिया है। साथ ही यह समाज म घटी पिछली घटना के सम्मिलित प्रभावों का फल है।

मैंन किसी के साथ मतभेद होने के कारण त्याग पत्र नहीं दिया है। मैंन प्रधान मंत्री को अपने निर्णय से अवगत करा दिया है। मैं आज रात को दिल्ली जाऊंगा। राजस्थान विधान सभा की बैठक बुलाने का निर्णय कल लिया जायगा।

'यह स्पष्ट है कि मने इस त्याग का निर्णय प्रधान मंत्री के चाहने पर नहीं लिया है और न प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष से मतभेद व टकराव के कारण।

'हमारे पास अभी 45 विधान सभा के सदस्यों का बहुमत है। जब तक वे हमें छोड़ कर नहीं चले जाते तब तक मैं समझता हूँ कांग्रेस की वही ताकत बनी रहेगी।

कई विधान सभा के सदस्यों ने प्रधान मंत्री को तार भेजे हैं कि मुझे त्याग पत्र देने के निर्णय से रोका जाय। कई कांग्रेसी दिल्ली जाने की बात भी सोच रहे हैं। वहाँ वे हाई कमान से भी मिलेंगे। मैंने उनको ऐसा नहीं करने की सलाह दी है।

"मैं यह पद त्याग राजनीतिक सन्यास लेने के लिए नहीं कर रहा हूँ। मैं ऐसा करके कांग्रेस की संगठनात्मक स्तर पर अधिक सेवा कर सकूंगा। कांग्रेस को ठेस पहुँचाने की बात मेरे दिमाग में उठ ही नहीं सकती।

'मैं काफी लम्बे समय तक राजस्थान का मुख्य मंत्री रह चुका हूं। इसलिए मुझे अब मुख्य मंत्री पद से हट जाना चाहिए।

हमे नई परिस्थितियों को मान लेना चाहिए और कांग्रेस दल में एकता बनाये रखना चाहिए।

हमारे सामने पहला काम नये नेता का चुनाव करना है और इस चुनाव में हाई कमान हमारी सहायता करेगा।'

अतीत का विवेचन

श्री मोहनलाल सुखाडिया के पदत्याग ने उनके सत्रह साल के शासन को समाप्त कर दिया है। यह सच्चाई सच है। लेकिन जैसा कि टाइम्स ऑफ इण्डिया ने लिखा है सुखाडिया के पदत्याग से एक युग समाप्त हो गया है, सही नहीं है। कौन सा युग कब चालू होता है और कब समाप्त होता है यह कहना आसान बात नहीं है। क्योंकि इतिहास में कभी भी एक के समाप्त होने के बाद दूसरा युग चालू नहीं होता है। गर्भवती स्त्री की तरह हर युग में दूसरे युग का गर्भ ठहर जाता है। गर्भवती स्त्री की ही तरह हर गर्भवान युग पैदा होने वाले युग पर चिन्तन और परिकल्पनाएँ करने लगता है। *सुखाडिया के युग को लेकर ऐसे गर्भवान युग की बात नहीं की* जा सकती है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि सुखाडिया का शासन काल ही नहीं वरन पिछला समूचा कांग्रेसी शासन बांझ युग रहा है। सुखाडिया के पदत्याग से नई सम्भावनाओं का द्वार खुला है।

सुखाडिया के पदत्याग का कारण प्रधान मन्त्री द्वारा उनका विश्वास खोना है। सुखाडिया ने राजस्थान में जिस तरह का प्रशासन चलाया था उससे श्रीमती इन्दिरा गांधी ही नहीं कोई भी समझदार व्यक्ति प्रसन्न नहीं हो सकता था। 1967–68 में 150 करोड रुपये अकाल पर खर्च किये गये। उस विपुल राशि का भ्रष्ट अधिकारियों और भ्रष्ट मन्त्रियों की साठ गांठ से दुरुपयोग किया गया। इस सम्बन्ध में किसी भी सम्बन्धित व्यक्ति ने यह जानने की चेष्टा नहीं कि इतनी विपुल राशि का घोटाला कैसे हुआ। किसी भी भ्रष्टाचारी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई।

भारत सरकार के अफसरों का अकाल सम्बन्धी एक दल जब तब राजस्थान में आता रहा है। उन्होंने अध्ययन रिपोर्टों में यह स्पष्ट लिखा कि कतिपय क्षेत्रों में राजनैतिक कारणों से अकाल घोषित किया गया है। इसी कारण भारत सरकार राजस्थान सरकार को 30 करोड रुपये की राशि देने को तैयार नहीं हुई। इस राशि को मनमाने तरीके से राजस्थान में खर्च किया गया था और उसकी स्वीकृति भारत सरकार से चाही गई थी।

स्मरण रहे कि कही बरकत उल्ला खा मन्त्रीमण्डल भी ऐसी राजनतिक भूल नही कर बैठे। श्री खा को इस सम्बन्ध मे सतक रहना होगा।

राजस्थान मे सुरक्षा के लिए बनी सडको में घोटाला हुआ है। केन्द्रीय सरकार न भरसक कोशीश की कि भविष्य मे ऐसा भ्रष्टाचार न हो और हुए भ्रष्टाचार की जाच हो। ओवर ड्राफ्ट की रकम शीघ्र चुकाई जाय। इस रकम के लिए तकाजा किया जाने लगा। सुखाडिया ने कहा कि इस राशि को भविष्य मे दी जाने वाली राशि के बतौर लिख दिया जाय।

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को सुखाडिया के वरिष्ठ मन्त्रियों बृजसुदर शर्मा, थी भीखा भाई, श्री दामादर व्यास और श्री रामप्रसाद लढ्ढा के विरुद्ध शिकायतें मिली थी। विधान सभा म श्री रामप्रसाद लढहा और मनफूलसिह के खिलाफ जोरो से आवाजें उठाई गई थी।

विश्वास किया जाता है कि श्रीमती इन्द्रिरा गाधी ने सुखाडिया के भ्रष्ट मन्त्रियो स त्याग पत्र ले लेने को कहा था। सुखाडिया द्वारा भ्रष्ट मन्त्रिया क खिलाफ किसी प्रकार की कायवाही का किया जाना तो दूर रहा वह उनका बचाव करने लगा। प्रधान मन्त्री इससे आग बबूला हा गई। साथ ही दिल्ली म यह अनुभव किया जान लगा कि सुखाडिया ने सत्रह साल तक अपने को और अपनी काग्रेस को सत्ता में तो कायम रख लिया, लेकिन काग्रेस सगठन का सामाजिक तौर पर कमजार बना दिया। 1957 क आम चुनावो को छोढ काग्रेस को राजस्थान म कभी भी इस प्रकारका स्पष्ट बहुमत नह मिला है। दलगत सशक्त विधान सभा स्तर पर विभिन्न दलो के विरोध के बावजूद सुखाडिया ने आपन अपको को सत्ता में रखा है। बात यहा तक बिगड गई थी कि स्वय उदयपुर मे सुखाडिया का प्रभाव कम होने लगा था। 1967 में वह केवल 3000 मतो स अपन विरोधी जनसघ के उम्मीदवार श्री भानुकुमार शास्त्री को हरा सका। यदि मुसलमान बोहरा का सुखाडिया को मत नही मिलता तो सुखाडिया की जीत असम्भव थी।

सुखाडिया और नाथूराम मिर्धा में हमेशा मतभेद चलता रहा है। समयान्तर मे राजस्थान म काग्रेसी विधान सभा दल और काग्रेसी सगठनात्मक दल म भयकर विस्फोट की स्थिति तयार हा गई। 7 माच 1966 म जयपुर मे जो गोली काण्ड हुआ वह हृदय विदारक था। सुखाडिया की स्थिति विधान सभा म सगठनात्मक दल मे और साधारण जनता म सभी तरह स खराब होने लगी थी। उदयपुर म सामाजिक अराजकता का

स्थिति यहां तक पहुंच गई कि कुछ बदमाश लड़के लड़कियों के हॉस्टल में घुस गए और वहां से लड़कियों के कपड़े और बालियां उतार ले गये। बाद में वे ही लड़के उदयपुर जिलाधीश के बंगले में एक पार्टी में मिले। उन्हीं के यहां रहने वाला एक लड़का उस कांड में शामिल था। राजस्थान में कानून की यह स्थिति हर जगह बनी हुई थी। पुलिस विभाग ऊपरी दबाव के कारण हर समय कुछ न करने वाली स्थिति में रहता था। राजस्थान में कानून नाम की कोई चीज नहीं रह गई थी।

राजस्थान में फैली इस अराजकता का लाभ राजस्थान के स्वार्थी तत्वों ने खुलकर उठाया। वे नहीं चाहते थे कि सुखाड़िया किसी तरह हटें। उन्होंने दिल्ली जाकर प्रयास किया कि सुखाड़िया को मुख्य मन्त्री बना रहने दिया जाय। लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

श्री सुखाडिया 1956 में श्री नाथूराम मिर्धा के सामने भी सदन पद त्याग करने की धमकी दी थी। तब प्रधान मन्त्री उनके इस निर्णय से सहमत नहीं हो सकी। सुखाडिया मुख्य मन्त्री पद पर बना रहा। परन्तु इस बार बात बिल्कुल उल्टी हुई। सुखाडिया को सत्ता छोड़नी पड़ी। उसके अन्तरआत्मा की आवाज की यही पृष्ठ भूमि रही है।

सुखाडिया के पद त्याग पर दिल्ली से प्रकाशित (The Mother Land) ने लिखा राजस्थान के मुख्य मन्त्री सुखाडिया राजनैतिक तौर पर निर्दोष नहीं है। 1954 मे उसने जिस छोटी सी स्थिति से उठकर सत्ता हथियाई और सत्रह साल तक उसे कायम रखा उससे उसकी कुटिल नीति की निपुणता का पता चलता है। यह केवल आन्तरिक प्रेरणा ही नहीं है जिसके कारण उसने सत्ता छोड़ी दी। सुखाडिया जैसा व्यक्ति सत्ता को तब तक आसानी से छोड़ने वाला नहीं है जब तक कि उसे सत्ता छोड़ने को मजबूर नहीं किया जाये। महत्वपूर्ण बात यह है कि वह राजनीति से सन्यास नहीं ले रहा है। उसने कहा हैं, मैं सन्यास नहीं ले रहा हूं।

सुखाडिया ने जिस सरलता से भीगी बिल्ली की तरह सत्ता को छोडा है वह उसके व्यक्तित्व को सही अर्थों में प्रकट करता है। राजस्थान का शेर सुखाडिया गीदड बन गया। वह पत्थर का देवता बन गया।

इतिहास के प्रवाह में दो प्रकार के व्यक्ति आ टपकते हैं या यो कहिये कि इतिहास उन व्यक्तियो को अनायास ही पकड लेता है। ऐसा व्यक्ति जब

नव इतिहास के प्रवाह म रहत हैं उनका व्यक्तित्व निखरा हुआ रहता है और व ऐतिहासिक पुरुष के रूप म सामने आते हैं । तब उनका व्यक्तित्व भारी दृष्टिगोचर होने लगता है लेकिन इतिहास की धारा से हटते ही उसका वह चेहरा बुझ जाता है । वे साधारण हाड-मास के व्यक्ति लगने लगते हैं । सुखाडिया का ऐसा दोहरा चेहरा हमारे सामने आया है ।

इतिहास के प्रवाह म एक दूसरे प्रकार के व्यक्ति आते हैं जो इतिहास म अनायास ही नही आ जाते । वे इतिहास बनाने से इतिहास के प्रवाह म आ जाते हैं । वे इतिहास की धारा को मानवीय अभिप्रेत से अनुरंजित कर देते हैं । य व्यक्ति इतिहास की धारा से हटने पर भी ऐतिहासिक व्यक्ति बने रहते है । श्री जयनारायण व्यास एक ऐसा ही व्यक्ति था ।

राजस्थान के इतिहास में 1953 मे सुखाडिया को ठीक उसी प्रकार चुना गया जिस प्रकार 1971 72 मे इतिहास ने श्री बरकत उल्ला खा को चुना है । इतिहास द्वारा व्यक्तियो के इस प्रकार का चयन खतरे से खाली नही होना । व इतिहास के प्रभाव म एक स्वचालित कठपुतली स अधिक नही होत । सयोग ही उनके अस्तित्व का आधार होता है ।

सुखाडिया राजस्थान के इतिहास की एक प्रासगिक कठपुतली रहा है । वह इतिहास के थपेडों म नाचता रहा है वृत्तिक तौर पर वह इतिहास की सयोगिक परिधि म थिरकता रहा है । इतिहास को वाछित मोड देने म ऐसे व्यक्ति अपने को खाली पाते है । इतिहास के बहाव से हट जाने के बाद वह कठपुतली इतिहास के पन्ना में सुसज्जित रहती है ताकि इतिहास का विद्यार्थी उसका सही अवलोकन कर सके । इतिहास का विद्यार्थी इस तरह इतिहास की भारी भरकम इमारत को दीमक की तरह खाने स रोकता है । जहा इतिहास का विद्यार्थी ऐसा नही कर पाता है वहा मनुष्य की जिजीविषा का स्रोत फीका पड जाता है ।

राजस्थान में यही हो रहा है । यहा इतिहास व्यक्ति को खा रहा है । यहा समाज एक सकटापन्न स्थिति की तरफ द्रुत गति से बढ रहा है । उसे रोकना होगा । उस नया मोड देना होगा ।

बेदाग कौन ?

सुखाडिया के मन्त्री पद से हट जाने के बाद कांग्रेस पार्टी से एक आवाज चारों ओर से उठी कि राजस्थान का मुख्य मंत्री एक बेदाग व्यक्ति होगा। समूचे भारत के पत्रों ने लिखा कि राजस्थान में बेदाग व्यक्ति की खोज हो रही है। ऐसे व्यक्ति की खोज में हो सकता है कि उस व्यक्ति को कांग्रेस पार्टी की परिसीमा के बाहर भी ढूंढा जाय लेकिन इस बेदाग व्यक्ति की खोज कांग्रेस पार्टी की सीमाओं में हुई।

राजस्थान में इस अवस्था में कांग्रेस के हर मंत्री को परखा जाने लगा कि उनमें बेदाग व्यक्ति कौन है ? इस संदर्भ में राजस्थान और बाहर के पत्रों ने श्री राम निवास मिर्धा और श्री राज बहादुर का नाम उछाला।

लेकिन वे किसी भी तरह से श्री बरकत उल्ला खां के नाम तक नहीं पहुँच पाये। एक के बाद एक मंत्री परखा जाता और बाट देखी जाती कि श्रीमती इन्दिरा गांधी किस को बेदाग व्यक्ति मानती हैं ? राजस्थान का राजनैतिक वातावरण कुछ समय के लिए झंकृति हो उठा। राजस्थान के क्षितिज पर शून्यता के बादल मंडराने लगे।

जैसा कि युग के लब्ध प्रतिष्ठ मनोवैज्ञानिक विचारक श्री मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक 'मनुष्य नैतिकता और समाज' में लिखा कि आज का युग ही ऐसा युग है जिसमें कोई भी व्यक्ति हीन भाव संकोच मनोवृत्ति और वेशर्म संवेदन से अपने को नहीं बचा सकता उसी प्रकार आज के युग में कोई भी व्यक्ति लार्ड एक्टन के अनुसार सत्ता में आकर अपने को बेदाग नहीं रख सकता। सत्ता और बेदागपन साथ साथ चले यह इतिहास का अनहोना तर्क है। फिर भी अखिल भारतीय कांग्रेस के सचिव श्री शंकर दयाल शर्मा ने जयपुर में आकर इस बेदाग की भावना को सार्वजनिक रूप दिया, यह एक प्रशंसा की बात थी।

राजस्थान में असमंजस की स्थिति तीन दिन तक चलती रही। तब यकायक बरकत उल्ला खां का नाम राजस्थान के राजनीतिक क्षितिज पर उभर कर आया। लोगों को आश्चर्य हुआ कि यह Self effacing आराम

दह व्यक्ति सुखाडिया के पिछले सत्रह सालो के कुटिल शासन का बस सम्भाल लगा।

जन साधारण म बरकत की सात पीढी की चर्चा होने लगी। उनके पिता दादा और परदादा क चरित्र का लखा जोखा होने लगा। टोंक स जोधपुर तक के उनके आवास को क्रमबद्ध तरीके से बुना जाने लगा।

श्री बरकत राजस्थान के मुख्य मत्री बने। राजस्थान का राजनतिक क्षितिज एक बार पुन विकम्पित हुआ। श्री बरकत ने पुराने मत्रियो म स आठ मत्रियो की घोषणा की जिसम भीखा भाई, राम किशोर व्यास और हरिदेव जोशी को भी लिया गया। जनता म इससे शका बनी रही। कई चोर कहे जाने वाले मत्रियो को मत्री मडल म नही लिया गया। लेकिन भीखा भाई अपने कारनामा से जनता म प्रसिद्ध हो चुका था। उस कैसे लिया गया? एक प्रश्न वाचक चिह्न जन मानस पर मडराने लगा। बाहर से एक मत्री श्री ओकार लाल को लिया गया। जनता म सम्भावना बनी रही कि बरकत अपने मत्री मडल का विस्तार करेगा और बदनाम मत्रियो को अपन मत्री मडल से हटा देगा। कई मत्री जो मत्री मडल में नही लिय गये थे बरकत का मुँह जोहने लगे। श्री हीरालाल देवपुरा और श्रीमती सुमित्रासिंह के नामो को मत्री मडल मे लिय जाने की आवाज उठी। लेकिन मत्री मडल म कोई विस्तार नही हुआ।

राजस्थान कांग्रेस के कतिपय सत्ताविहीन नताओ ने आवाज उठाइ और आशका व्यक्त की कि यदि कांग्रेस के अधिकाश नेता सत्ता मे नही रह तो कांग्रेस आने वाले चुनाव मे डूब जायेगी। वे इस सम्भाविकता का अनुमान नही लगा सके कि इदिरा का नेतृत्व कांग्रेस को बिना सत्ता के चुनाव म जीत दिला देगा। राजस्थान का पत्रकार भी इस वस्तुस्थिति का सही मूल्याकन नही कर सका।

इसी बीच बांगला देश का अभ्युदय हुआ। बांगला देश ने पाकिस्तान क शिकजे से उपनिवेशीय रूप से छुटकारा पाया और वहा पर अभिजात वर्गीय क्रान्ति के बीज पडे। इदिरा गांधी का यह काय रूस के उस काय से बिल्कुल भिन्न था जिससे रूस ने योरुप म योजना बाधित तरीके से हँगरी और चेकोस्लेवाकिया की प्रगतिशील भावनाओं का दबा कर रूसी अधिनायकवाद का कायम किया। लकिन इस बार प्रशसा की बात रही कि रूस ने जम कर

भारत और बांगला देश का साथ दिया। इससे एशिया ही नहीं संसार की राजनीति का ध्रुवीकरण बहुविद शक्तियों के उभरने में हुआ।

श्री बरकत एक उदार व्यक्ति के रूप में उभर कर समाज के सामने आया परन्तु पहली अवस्था में वह केवल मिश्रित बनाम मंत्री मंडल ही बना पाया। श्रीमती इन्दिरा गांधी की यह देन राजस्थान के लिए कम नहीं थी।

श्री बरकत ने बड़ी हिम्मत से काम लिया। कांग्रेस दल में सालों से चली आ रही सत्ता की होड़ का उसे अपने ही कांग्रेसी विधायकों से सामना करना पड़ा। उनके मृदुल स्वभाव और उदार वृत्ति को देख कईयों का यह अनुमान था कि बरकत राजस्थान की भविष्य की राजनीति को नहीं सम्भाल सकेंगे। लेकिन उन्होंने एक दृढ़ निश्चलता को अपने व्यवहार में प्रदर्शित किया है।



समाजवादी मंच

भारतीय कांग्रेस में समाजवादी मंच की बात नई नहीं है। आजादी के बहुत पहले कांग्रेस में ऐसे मंच की बात आचार्य नरेन्द्र देव और एम एन राय जैसे लोगों ने की थी। ये क्रांतिकारी समाजवादी नेता कांग्रेस को प्रगतिशील संस्था नहीं बना सके। कई दिनों तक वे कांग्रेस में प्रगतिशीलता को पालने का प्रयास करते रहे। लेकिन उन्हें अन्ततोगत्वा हट कर एक नये दल का निर्माण करना पड़ा। उस समय भारत एक उपनिवेश था और राजनीति का संदर्भ आज से भिन्न था। अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का ध्रुवीकरण पूंजीवाद और समाजवाद के बीच था। पूंजीवाद के अनुभव सामने आ चुके थे। समाजवाद की परिकल्पनाएं और वैज्ञानिक राजनीति की कार्य पद्धति प्रारम्भिक अवस्था में थी। मार्क्सवादी विचारों का प्रवेश भारत में होने लगा था। यह 1917 के पहले और आस पास की बात है। साम्यवादी रूस में सत्ता हथियाने में सफल हुए। वे वहाँ सामंतवाद के स्थान पर अभिजातवर्गीय क्रांति उद्भासित करने का प्रयास करने लगे। साम्यवादी दल के सत्ता में कार्य किये जाने के अनुभव अभी प्रकट नहीं हुए थे। समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की परिरेखाएँ अभी रूस में नहीं पड़ पाई थीं। समाजवाद अभी भी एक आदर्श था।

आज अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में परिवर्तन आ गया है। संसार का ध्रुवीकरण पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच न होकर सभी प्रकार की तानाशाहियों (वाम पक्षीय और दक्षिण-पक्षीय) और लोकतंत्र के बीच हो गया है। आज पूंजीवाद के साथ साथ समाजवाद की त्रुटियां भी अनुभव से प्रकट हो चुकी हैं। आज पूंजीवाद विभिन्न रूप में मौजूद है तो समाजवाद भी चीन, रूस, युगोस्लाविया, चैकोस्लावाकिया, हंगरी आदि देशों में अनेक रूपों में मौजूद है। न तो पूंजीवाद में और न समाजवाद में व्यक्ति की मूर्धा को फलने-फूलने का अवसर मिल रहा है। मानवीय स्वतंत्रता का प्रतिरोध हुआ है।

इस संदर्भ में समाजवाद को लेकर समाजवादी-मंच की बात एक ऐतिहासिक त्रुटि के अलावा कुछ नहीं है। कांग्रेस में यह मंच समाजवाद की

भारत और बांगला देश का साथ दिया। इसस एशिया ही नहीं ससार की राजनीति का ध्रुवीकरण बहुविद शक्तियों के उभरने म हुआ।

श्री बरकत एक उदार व्यक्ति के रूप म उभर कर समाज के सामने आया परन्तु पहला अवस्था म वह केवल मिश्रित वर्गाग मत्रा मडल ही बना पाया। श्रीमती इन्दिरा गांधी की यह देन राजस्थान के लिए कम नहीं थी।

श्री बरकत न बडी हिम्मत स काम लिया। कांग्रेस दल म सालों से चली आ रही सत्ता की होड का उस अपने ही कांग्रेसी विधायकों स सामना करना पडा। उनके मृदुल स्वभाव और उदार वृत्ति को देख कई्यों का यह अनुमान था कि बरकत राजस्थान की भविष्य की राजनीति को नहीं सम्भाल सकेंगे। लेकिन उन्होंने एक दृढ निश्चलता को अपने व्यवहार में प्रदर्शित किया है।



समाजवादी मंच

भारतीय कांग्रेस म समाजवादी मच की बात नई नही है। आजादी के बहुत पहले कांग्रेस म ऐसे मच की बात आचाय नरेन्द्र देव और एम एन राय जसे लोगो ने की थी। य क्रांतिकारी समाजवादी नेता कांग्रेस का प्रगतिशील सस्था नही बना सके। कई दिनो तक वे कांग्रेस म प्रगतिशीलता को घोलन का प्रयास करते रह। लेकिन उन्ह अन्ततोगतवा हट कर एक नये दल का निर्माण करना पडा। उस समय भारत एक उपनिवेश था और राजनीति का सदभ आज स भिन्न था। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो का ध्रुवीकरण पूजीवाद और समाजवाद क बीच था। पूजीवाद के अनुभव सामन आ चुक थ। समाजवाद की परिकल्पनाए और वज्ञानिक राजनीति की काय पद्धति प्रारम्भिक अवस्था में थी। मार्क्सवादी विचारा का प्रवेश भारत म होन लगा था। यह 1917 के पहल और आस पास की बात है। साम्यवादी रूस मे सत्ता हथियान म सफल हुए। व वहाँ सामन्तवाद क स्थान पर अभिजातवर्गीय क्रांति उद्भासित करन का प्रयास करने लगे। साम्यवादी दल के सत्ता मे काय किये जान के अनुभव अभी प्रकट नही हुए थे। समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की परिरेखाएँ अभी रूस म नही पड पाई थी। समाजवाद अभी भी एक आदश था।

आज अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो मे परिवतन आ गया है। ससार का ध्रुवीकरण पूजीवाद और साम्यवाद के बीच न हाकर सभी प्रकार की तानाशाहियो (वाम पक्षीय और दक्षिण पक्षीय) और लोकतत्र के बीच हो गया है। आज पूजीवाद के साथ साथ समाजवाद की त्रुटिया भी अनुभव स प्रकट हो चुकी हैं। आज पूजीवाद विभिन्न रूप मे मौजूद है तो समाजवाद भी चीन रूस युगास्लाविया चेकोस्लावाकिया हगरी आदि देशों म अनक रूपा में मौजूद है। न तो पूजीवाद म और न समाजवाद मे व्यक्ति की मूर्घा को फलने-फूलने का अवसर मिल रहा है। मानवीय स्वतत्रता का प्रतिषेध हुआ है

इस सदभ म समाजवाद को लेकर समाजवादी-मच की बात एक ऐतिहासिक त्रुटि के अलावा कुछ नहीं है। कांग्रेस मे यह मच समाजवाद की

बात केवल सत्ता हथियाने को लेकर ही कर रहा है। यह और अवसरवादी साथा की दौड़ है। राजनीति के माध्यम से धन अर्जित करने की दौड़ है।

सुखाडिया मन्त्री मंडल के परिवर्तन के बाद और श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व के प्रभावशाली होने के साथ साथ समाजवाद की बात राजस्थान कांग्रेस में जोरा नारों से की जाने लगी है। कई तथाकथित वाम पंथीय जिनका ताल मेल कम्युनिस्ट पार्टी से नहीं बैठ सका था वे समाजवाद की बात का फायदा उठा कर कांग्रेस में घुस गये है। समाजवादी मंच की कई बैठकें हुई हैं। दिल्ली के युवा-तुर्क भी इस मंच को दिशा निर्देशन देने जयपुर आये। पत्रकारों ने अपने कालमों में लिखा कि कांग्रेस में समाजवादी मंच के माध्यम से नया खून आ रहा है। लेकिन चुनावों के बाद तक यह रात्रि का दु:स्वप्न ही लगा।

चुनाव के लिए कांग्रेस द्वारा टिकट वितरित किये जाने लगे। सभी आगन्तुक प्रयोजनात्मक रुख अपना कर अपने को समाजवादी कहने लगे। कांग्रेस में कुछ नये घुसपैठिये टिकट ले पाये और अधिकांश नहीं। कांग्रेस ने पांच सीटें कम्युनिस्टों से लिये छोड़ दी। सोशलिस्ट कांग्रेस में वह ताल-मेल नहीं बिठा पाये जो कम्युनिस्ट कांग्रेस से बिठा पाये। चुनाव में कांग्रेस ने राजस्थान में 184 में से 145 सीटें जीत ली।

आज चुनाव के बाद राजस्थान कांग्रेस के समाजवादी मंच की प्रथम स्टीयरिंग कमेटी के अध्यक्ष से लेकर उसके सदस्य तक तेईस व्यक्ति हैं। इन सब व्यक्तियों में से श्री अमृत नाहटा और श्री गणेश लुहार को छोड़ अन्य व्यक्तियों को केवल समाजवादी मंच में आने से ही उन्हें समाजवादी कहा जा सकता है। उनकी अब तक की राजनीति उनके समाजवादी होने का आश्वासन नहीं देती। समाजवादी होने के अलावा वे वैचारिक राजनीति के विद्यार्थी भी नहीं रहे हैं।

श्री अमृत नाहटा कभी कम्युनिस्ट रह चुके हैं और उनका व्यक्तित्व मार्क्सवादी थपेड़ों से बना है। लेकिन दूसरे सदस्य इस मंच में केवल नाम ही नाम हैं।

इनके अलावा अन्य व्यक्तियों के बारे में यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि वे आज की राजनीति और दार्शनिक विचार पद्धतियों से कोरे हैं। श्री

ीन ब्रधु वर्मा की योग्यता उनके केवल स्व माणिक्यलाल वर्मा के पुत्र होने की योग्यता है, जो राजस्थान की अवसरवादी राजनीति के शीप रहे हैं।

समाजवादी मच अभी शैशव अवस्था मे है। लेकिन इस अवस्था म वह अ तिम सासें लेन लगा है। ऐसा लगता है कि सत्ता की प्राप्ति की होड म जो दौर समाजवादी मच म आया था वह आने वाले चुनावो तक सुप्त रहेगा और बरकत उल्ला खा मत्री मडल के विरुद्ध षडयत्र का अड्डा रहेगा।

भारत की तरह राजस्थान मे भी समाजवाद ससदात्मक लोकतन्त्र और दलगत राजनीति को लागू किया जा रहा है। इन राज-नेताओ को अब तक इस नतीजे पर पहुच जाना चाहिए था कि समाजवाद ससदात्मक लोकतन्त्र और सत्तात्मक राजनीति घिसपिट चुकी हैं। वास्तविक लोकतन्त्र की स्थापना केवल तब की जा सकेगी जब पिछले अनुभवो के आधार पर वनानिक राजनीति की बात की जायगी। समाजवाद की राजनीति एक पूर्वाग्रह की राजनीति रही है।

आज की राजनीति सत्ताविहीन दलविहीन, ससदात्मक लोकतान्त्रिक परम्पराओ स दूर मार्क्सवाद से आगे जाकर भौतिकवादी परम्पराओ का न छोडते हुए एक ऐसी मानववादी राजनीति है जो उदारवाद मार्क्सवाद और बीसवी शताब्दी तक के दार्शनिक अनुभवो का आधार बना कर आगे बढ़ने की बात करती है।

प्रश्न होता है कि क्या श्री बरकत उल्ला खा मन्त्रिमडल ऐसी राजनीति के मानवीय स्वरूप को उभार कर वास्तविक लोकतन्त्र की स्थापना कर सकेंगे? क्या वे राजनीतिज्ञो को राजनीति म यह नई शिक्षा द सकेंगे? उन्हे सस्कृत कर सकेंगे। समय की आखें उन पर लगी हुई हैं। उन्हे अच्छी विरासत नहीं मिली है।

चुनावो के बाद चू कि सत्ता काग्रस को भारी बहुत मिल गया है श्री बरकत का सामाजिक और राजनतिक उत्तरदायित्व बढ़ गया है। आज राजस्थान म काग्रेस इस स्थिति म है कि वह हर कार्यक्रम को तत्परता स लागू कर सकती है।

श्रीमती इन्दिरा गाधी न बारम्बार कहा है कि राजनतिक आजादी आर्थिक आजादी के बिना सम्भव नहीं है और न इसके विपरीत भी। यह

सही भी है। परन्तु ऐसी राजनैतिक और आर्थिक आजादी केवल एक जन शिक्षित-समाज ही ला सकती है। इसलिए राजस्थान में जन शिक्षा की वास्तविक महत्ता बनी हुई है। जन शिक्षा सही अर्थों में धर्म निरपेक्ष शिक्षा होगी। धर्म निरपेक्ष शिक्षा का अर्थ सब धर्मों की शिक्षा नहीं है। ईश्वर अल्ला तेरे नाम' से काम नहीं चलेगा। हमें समूची पाठ्य पुस्तकों का रूप और अर्थ परिवर्तन करना होगा। उन्हें नये ज्ञान का धरातल देना होगा। शिक्षण संस्थाओं को नई वैचारिक क्रांति का अग्रदूत बनना होगा।

इस परिवर्तन के लिए एक विचार क्रांति चाहिए। एक नवजागरण चाहिए। एक ऐसा नवजागरण जो योरोपीय नवजागरण फ्रांसीसी-क्रांति रूसी क्रांति, औद्योगिक क्रांति, अमरीका के स्वातंत्र्य संग्राम उदारवाद और मार्क्सवाद द्वारा प्राप्त अनुभवों से ऊपर उठ कर खुली धरती और ऊँचा आकाश में सांसें लेगा।

कांग्रेस का समाजवादी मंच आज की बदलती राजनैतिक परिस्थितियों में इन सब का आश्वासन नहीं देता। सामाजिक मंच का अर्थ कम्युनिस्ट घुसपैठ भी नहीं है। समाजवादी मंच कांग्रेस की अमनोमय राजनीति के मलबे में सड़ कर मर जायगा, यह कहा जा सकता है।

समाजवादी मंच का यह ध्यान रखना चाहिए कि तानाशाही में अपने को कायम रखने की प्रवृत्ति है। अधिनायकवादी कांग्रेस में तानाशाही का अपना एक स्वरूप बन चुका है। कांग्रेसी संगठन सत्ताधारी लोगों की अनुचरी बन गई है। इस तानाशाही के अंतर्गत आर्थिक आयोजन व्यक्तिगत स्वतंत्रता सामूहिक प्रयास और सामाजिक प्रयास के नाम पर इनकी अवहेलना होगी। फलतः समाजवादी संसार में या यों कहिए समाजवादी सामाजिक-व्यवस्था में एक प्रकार की उच्च अच्छी और वास्तविक लोकतंत्र का फलना फूलना असम्भव हो जायगा है।

स्मरण रखने योग्य बात यह है कि इतिहास की आर्थिक व्याख्या भौतिकवाद के अनुचित व्याख्या की उपज है। इस व्याख्या में द्वैतवाद निहित है जबकि भौतिकवाद अद्वैत है। इतिहास एक निर्धारित प्रवाह है और वहाँ एक से अधिक हेतु है। मानव इच्छा शक्ति उनमें से एक है और उसका प्रादुर्भाव सीधा आर्थिकता से नहीं लगाया जा सकता।

यह आशका बनी हुइ है कि समाजवादी मच एक मखौल का दूसरा नाम हो जायगा। गवनमेट होस्टल का 14 नम्बर का कमरा अवसरवादी लोगो का जमघट न बन जाय, ऐसी सम्भावना बनी हुई है।

राजनैतिना की एक अवसरवादी जमात कभी अपन आपको कम्युनिज्म कहती है तो कभी समाजवादी। वह कम्युनिष्ट पार्टी को भी दीमक की तरह खा रही है और नये राजनैतिक आन्दोलन को भी आगे नही बढ़ने दे रही है। स्वय कम्युनिष्ट पार्टी उनसे हैरान है।

आज भारतीय कम्युनिष्ट आन्दोलन दिशा शून्य हाकर एक चौराहे पर खडा है। अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिष्ट आन्दोलन ने भारतीय कम्युनिष्ट आन्दोलन की बलि अपने स्वार्थों के लिए दे दी है। राजस्थान मे राजनीति, सत्ता और राजनतिक दलो का इतिहास राजस्थान को विभ्रम स्थिति की ओर ले जा रहा है। कांग्रेस का समाजवादी मच इस सब से बेखबर है।

इसलिए श्री बरकत को देखना[1] है कि यह समाजवादी मच अच्छी राजनीति का आधार कसे बन ?



बौद्धिक बलात्कार

राजस्थान म अब तक बौद्धिक बलात्कार हुआ है। पिछले तेइस सालों म यहाँ की बौद्धिक विरासत को योजना बाधित (regimented) और म निचोड़ा गया है। बुद्धि जीवियों का कचूमर निकाला गया है। राज्य क सम्पूर्ण बौद्धिक विभागों और संस्थानों को दिवालियेपन के अड्डे बना दिये गये ह। वे विभाग और संस्थाएँ हैं

1 भाषा विभाग।
2 अभिलेखागार विभाग।
3 प्राच्य प्रतिष्ठान विभाग।
4 तीनों अकादमियाँ।
5 हिन्दी ग्रथ अकादमी।
6 राजकीय सांस्कृतिक अधिकारी का पद।
7 शिक्षा विभाग।
8 राजस्थान के समूचे विश्वविद्यालय।
9 जन सम्पर्क निदेशालय।

इन विभागों और संस्थाओं को जानबूझ कर झुठलाया गया है। उनका संचालन जानबूझ कर तृतीय दर्जे क व्यक्तियों के हाथ म दिया गया है। उदयपुर विश्वविद्यालय म श्री सत्य प्रसन्न सिंह भडारी को उपकुलपति पद पर प्रारूढ करना हमारी स्थापना का जीता जागता उदाहरण है।

राजस्थान म स्वतंत्रता क बाद प्रतिक्रियावादी और रूढ धरातल पर बौद्धिक स्तर को तयार किया जा रहा है। आये दिन चुन चुन कर एक न एक तथाकथित नई प्रतिभाओं को सामने लाया जा रहा है। ऊपर वर्णित विभाग इसमे अग्रणीय तो रह ही हैं। राजस्थान की साहित्य अकादमियाँ इसम अग्रणीय रही हैं। कभी वह चाद बिहारी लाल 'सखा' को खडा करती है तो कभी चारणीय परम्पराओं का शीर्ष सूयमल मिश्रण को।

स्वयं हिन्दी ग्रंथ अकादमी विभाग अटपटी भाषा में इड ग्रंथों के अनुवाद में पाठ्य-पुस्तकों का बहाना लेकर चिन्त्य प्रयास कर रही है।

आज आवश्यकता है कर्नल टाड श्री गौरी शंकर हीराचंद ओझा, कविराज श्यामदास, श्री रणछोड भट्ट श्री महता नणसी श्री अब्दुल फजल, सूयमल मिश्रण डा गोपीनाथ शर्मा, डॉ मथुरालाल शर्मा, डॉ दशरथ शर्मा और अन्य इतिहासकारों पर विहगम दृष्टि डालने की। बात इतिहास तक ही सीमित नहीं है। विज्ञान के हर विषय को वैज्ञानिक तौर पर सम्पादित करने की आवश्यकता है।

सुखाडिया मन्त्रिमंडल के समय राजस्थान की बौद्धिक विरासत को आगे नहीं बढाया गया है। उसके साथ बलात्कार किया गया है। राज्य सरकार द्वारा खरीदी गई पुस्तकें हमारी स्थापना की पुष्टि करती हैं।

सुखाडिया काल के समय राजनतिक स्तर पर भी बौद्धिक बलात्कार हुआ है। उस बलात्कार का स्वरूप अनोखे प्रकार का रहा है। राजनैतिक सहूलियत और सहायता के नाम पर राजस्थान के राजनतिक पीडितो को आर्थिक सहायता दी गई है। राजनीति के एक समय के राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिकों को 'राजनीतिक-पीडित संज्ञा में अभिहित कर उन्हे भाजना वाधित रूप से दबाया गया है।

राजस्थान के राजनतिक पीडितो* को राजस्थान राजनैतिक पीडित अधिनियम के अन्तगत 75/ रुपये से लेकर 250/ रुपये तक की मासिक

---

*राज्य सरकार द्वारा राजनतिक पीडितों को दी गई सहायता की मोटे तौर पर स्थिति इस प्रकार है। (यह सूची सम्पूर्ण नहीं है।)

झुंझुनू	में	143	व्यक्तियों को
चुरू	मे	10	व्यक्तियों को
चितौड	में	6	व्यक्तियों को
डूंगरपुर	में	4	व्यक्तियों को
सवाई माधोपुर	मे	6	व्यक्तियों को
टोंक	में	3	व्यक्तियों को
सीकर	में	13	व्यक्तियों को
जयपुर	में	63	व्यक्तियों को
जैसलमेर	में	5	व्यक्तियों को
झालावाड	में	3	व्यक्तियों को

माथिक पन्सन दी गई है। यह आर्थिक पसन कुछ इस तरह दी गई है कि उसस राजनतिक अवसरवादिता को बल मिला है।

राजनीतिक पीड़िता की सहायता के लिए एक समिति–श्री मथुरादास माथुर श्री बरकतउल्ला खां और श्री मोहनलाल सुखाड़िया की बनी हुई थी। राजस्थान के स्वतन्त्रता के सग्राम क अधिकाश अवसरवादी सनिको को उभार कर पेन्शन दी गई है। काग्रस न इस नियम स गुजरकर राजनतिक फायदा उठाया है। राजनैतिक पीड़िता क नाम पर इस समिति न विरोधी राजनीति को नहीं पनपने देन का हथियार बनाया है।

कोटा	म	3	व्यक्तियो को
नागौर	में	17	व्यक्तियों को
पाली	में	4	व्यक्तियो को
सिरोही	म	3	व्यक्तियों को
बूदी	म	3	व्यक्तियो को
बीकानेर	म	6	व्यक्तियों को
बांसवाड़ा	म	3	व्यक्तियो को
गंगानगर	में	31	व्यक्तियो को
जोधपुर	म	44	व्यक्तियो को
उदयपुर	म	31	व्यक्तियों को
भरतपुर	म	137	व्यक्तियों को
भीलवाड़ा	मे	21	व्यक्तियो को
अजमेर	म	7.	व्यक्तियो को

राजनतिक पीडित नियम का अभिप्राय उपनिवेश काल की राजनीति मे भाग लेने वाले उन सनानियो को लाभ पहुचाना था जो वास्तव म अंग्रेजी हुकूमत क शिकार रहे हैं और आर्थिक रूप से नि सहाय रह गय हैं। इन नियमो का यह प्रयोजन कभी भी नही था कि राजनीति मे निखट्टू व्यक्तियो की फौज तयार की जाय और राजनीति की मानवीय मूल्यों का प्रतिपघ किया जाय। राजस्थान में यही हुआ है।

राजनतिक पीडितो के नाम पर स्वतन्त्रता सग्राम के सनिको की एक ऐसी फौज खडी करदी है जो पवित्र रोमन साम्राज्य के समय गुलामो की तरह अपना जीवन काहिली म बिता रहा है।

क्या बरकत उल्ला खां राजस्थान मे हुए इस बौद्धिक बलात्कार का प्रतिकार मुजीबुरहमान की तरह करेंगे ? बागला देश मे बुद्धिजीवियों की ह यायें भौतिक रूप मे की गई है। इसलिए व उभर कर हमारे सामने नृशस हत्या के रूप म आइ हैं। लेकिन राजस्थान में बुद्धिजीवियों की हत्यायें सामाजिक और आर्थिक तौर पर हुई हैं। वे उभर कर सामने नही आई हैं। यहां का बुद्धिजीवी सास तोड चुका है। वह मानसिक गुलाम हो चुका है। राजस्थान म एक भी ऐसा साहित्यकार नही है जो गर्व के साथ विशुद्ध साहित्य विधा पर ही जिन्दा रह रहा हो। आज का लेखक समाज को किसी प्रकार का नतृत्व नही दे पा रहा है। अधिकाश लेखको का उद्देश्य हो गया है कि जिसकी खाओ बाजरी उसकी बजाओ हाजरी।"

अभी हाल म राज्य सरकार ने श्री गणेश चन्द्र जोशी मन्वतर' की पुस्तक वन मानव' के दो खण्ड जनक्जा और अशोक वासिनी–को जब्त कर लिया है और लखक के विरुद्ध केस चलाया ह। साहित्यकार क विरुद्ध किया गया यह व्यवहार हास्यास्पद है और किसी भी राज्य सरकार के लिए शमनाक है।

इस सम्बन्ध मे स्थिति यह रही है कि राज्य सरकार ने बिना पढे और बिना देख श्री मन्वतर की उन पुस्तको की 200 प्रतियाँ खरीद ली थीं ठीक उसी तरह जिस तरह बिना पढ़ जनसघ की धमकी में आकर उन पुस्तकों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है और 80 वष के वयोवृद्ध साहित्यकार को गिरफ्तार कर उस पर मुकदमा चलाया है।

क्या बरकतउल्ला खां बारहवी, तरहवी और चौदहवी शताब्दी के इस्लामी विद्वानो की विरासत का परिचय दे कर योरप म अरबी वाङ्मय के माध्यम से आये नवजागरण की तरह, राजस्थान की बौद्धिक विरासत को विस्तार देंगे ?

सुखाडिया और बरकत

सुखाडिया और बरकत में ज़मीन आसमान का अन्तर है। केवल उनकी राजनैतिक स्थिति समरूप रही है। दोनों इतिहास की कठपुतलियाँ रही हैं। जिन अर्थों में कठपुतलियाँ अपने प्रदर्शन में दर्शक गम्भीरता प्रकट करती हैं उन्हीं अर्थों में सुखाडिया और बरकत इतिहास के मजाक व्यक्ति रहे हैं। सुखाडिया राजस्थान की राजनीति का गिद्ध रहा है। उसने शान्त और अविचलित स्वभाव में उसने अपना राजनैतिक जीवन चलाया है। चमत्कारों से उसका फासला दूर रहा है। सुखाडिया उस ऐतिहासिक सामग्री का बना हुआ था जिससे अधिकांश तानाशाह बने होते हैं। सुखाडिया की जन्म-दृष्टि—सामाजिक पहलुओं को देखने की दृष्टि—यथार्थिक नहीं थी। वह नहीं चाहता था कि उसके अलावा और कोई राजनीतिज्ञ पनपे। अमरबेल की तरह वह राजनैतिक व्यक्ति रूपी पेड़ को खाना जानता था। उसने राजस्थान के समूचे राजनैतिक क्षितिज को लील लिया था।

सुखाडिया के शासन काल में किसी कांग्रेसी की यह हिम्मत नहीं थी कि वह उसकी तरफ अंगुली तक उठाये। शासकीय प्रशासन पर उसका पूरा अधिकार था। मथुरादास माथुर, नाथूराम मिर्धा, रामनिवास मिर्धा सभी उसकी गिरफ्त में फँस चुके थे। सुखाडिया के व्यक्तित्व ने सभी की आँखों को चौंधिया दिया था। रूस में जैसे ख्रुश्चेव स्तालिन के इशारे पर गोपक नृत्य करने को तैयार हो जाता था उसी प्रकार राजस्थान की राजनीति के सभी कांग्रेसी राजनेता सुखाडिया के इशारों पर नृत्य करने को तत्पर रहते थे।

सुखाडिया एक चतुर शासक रहा है। वह अपने ज्ञान की सीमाओं को विस्तार देता रहा है। राजस्थान की राजनीति उसकी पकड़ में रही है लेकिन राजनीति के जिन धागों को वह पकड़े था, उनका दूसरा छोर खाली था। सुखाडिया मूलतः पूँजीवादी था। वह हर समय अवसर की खोज में व्यस्त रहता था। राजनीति उसके लिए अनुचरी बनकर आई थी। राजनैतिक नरमियों से उसका कोई वास्ता नहीं था। यही कारण था कि वह बाराह

गिरि बकट गिरि के चुनावो म चयन की त्रुटि कर बठा। उसके साथ बुद्धिजीवी कहलाने वाले श्री मथुरादास माथुर भी चूक कर बैठा। बाद मे सुखाडिया ने बदले हुए सदर्भों से अपना तालमेल बिठाने का पूरा प्रयास किया। लेकिन इन्दिरा गाधी मे उसका कोइ तालमेल नही बठा।

मुखाडिया किसी राजनीतिक विरासत से नही बना था। श्री जयनारायण व्यास को छोड राजस्थान म राजनीति का कोई राजनीतिज्ञ राजनैतिक विरासत की उपज नही था। स्वय बरकत उल्ला खा भी नही। सुखाडिया राजस्थान के राजनतिक धारा मे अनायास ही बहकर आ गया था। राजनीति की धारा के बहाव म आकर वह उस धारा के वेग म एक बिना पतवार की नाव की तरह बहता रहा। सुखाडिया की तरह बरकत भी राजस्थान की राजनीति की धारा म अनायास ही बह कर आ गया है। सुखाडिया की तरह उसकी नाव भी व पतवार है। केवल अन्तर इतना है कि बरकत के नाव की पतवार इन्दिरा के हाथ म है, जबकि मुखाडिया की नाव का मस्तूल मोसमी हवाओं पर निभर रहा और इन्दिरा की आधी न उसकी नाव को डुबो दिया।

राजस्थान की अब तक की राजनीति की कोई दिशा नही रही है। इस दिशा विहीन राजनीति म सुखाडिया और बरकत एक स नायक रहे हैं। सुखाडिया राजस्थान की राजनीति का दिलीप कुमार रहा है जब कि बरकत राजस्थान की राजनीति का महमूद।

राजस्थान के इन नायको और सिनेमा के उन नायको के अभिनय म अन्तर केवल इतना है कि सिनेमा का नायक अपना अभिनय मुह पोतकर और मुखौटा लगाकर करते हैं जबकि राजनीति के ये नायक अभिनय बिना मुह पोते ही कर लेते हैं।

राजनतिक सत्ता मे एक नशा होता है। व्यक्ति उस भवर म पड कर अपने आपको भूल जाता है। मारवाड़ी की एक कहावत क अनुसार उसे आकाश टोपसी नजर आने लगता है।

राजनतिक सत्ता व्यक्ति को भ्रष्ट करती है—चाहे वह व्यक्ति महात्मा गांधी ही क्यो न हो। भ्रष्ट होना काग्रेसियो की बपौती नही है। कोई भी व्यक्ति सत्ता म आने पर भ्रष्ट हो जाया करता है और विशुद्ध राजनतिक सत्ता व्यक्ति को विशुद्ध रूप मे भ्रष्ट करती है।

सुखाडिया अपने जीवन काल म राजनीति के शिखर पर पहुँच गया था। उसने दोनो हाथो से फायदा उठाया जिससे वह लोकतन्त्र की उवरा भूमि नही तयार कर सका। उसने एक प्रकार का कवल कीडीनगरी तन्त्र तैयार किया है।

बरकत के पीछे इन्दिरा गाधी का सम्बल है। वह एक यन्त्र चालित कठपुतली की तरह है जो समय-समय पर बोलती रहती है कि जसे किसी ने पीछे स बटन दबा दिया हो।

श्रीमती इन्दिरा गाधी ने राजस्थान को प्रगतिशील पथ पर लाने के लिए बरकत का अपना घाडा चुना है। इन्दिरा गाधी का इतिहास ने इस बरकत रूपी घोड को नही दिया है। इसलिए घुडसवार क्या राक है व अख्तियाये बठे हैं। यही कारण है कि घोड की चाल म हर समय खतरा बना हुआ है।

सुखाडिया की तरह बरकत मूलत पू जीवादी नही है। वह अनावश्यक तौर पर आराम देह व्यक्ति है। लिहाज न उसे पलायनवादी बना दिया है। इसस वह 'खाली डिब्बे वाली राजनीति लेकर चल पडा है। कही ऐसा न हो कि इन्दिरा गाधी क आश्वासन बरकत के हाथ म आकर थाथ आश्वासन रह जाय। नील कमल म महमूद द्वारा गाया गया यह गीत कही बरकत की राजनीति पर पूरा का पूरा न उतर जाय। महमूद ने गाया है

खाली डब्बा खाली बोतल
ले ले मेरे यार।
खाली से नही नफरत करना,
खाली है सब ससार
खाली की गारटी दूगा,
भरे हुए की क्या गारटी।

बरकत ने आश्वासन दिया है (1) मैं भ्रष्टाचार को मिटा दूगा अन्यथा मैं स्वय मिट जाऊगा।

(2) गुलाबी नगर जयपुर की सब समस्याओ को एक साल म निपटा दूगा।

(3) शहरी सम्पत्ति की सीमा निर्धारित कर नगर आवास की समस्या हल कर दूगा।

इस तरह बरकत हर रोज नये २ आश्वासन दे रहा है।

सुखाडिया और बरकत को सबसे बडा लाभ राजस्थान की राजनीति की शून्यता को लकर है। राजस्थान की राजनीति म कही भी पत्थर फेंकिये कही से कोई आवाज लौट कर नही आएगी। राजस्थान का राजनतिक क्षितिज साफ है, हवाए शान्त है। पेड का पत्ता तक नहीं हिल रहा है। यही कारण रहा कि सुखाडिया न जो कुछ कहा उसका प्रतिरोध नहीं हुआ। बरकत जो कहेगा उसकी भी कानूनिक जाच नही होगी।

राजस्थान की राजनीति आज एक चौराहे पर खडी है। राजस्थान म काग्रेस की जीत इन्दिरा गाधी की नीतियो की जीत है। यह जीत खुशहाल समाज के स्थापना, की माग करती है। इस जीत से सुखाडिया-कालीन उन राजनीतिज्ञों को ठेस पहुँची है जो मध्यावधि चुनाव के स्वप्न देख रहे थे।

राजस्थान म काग्रेस की जीत न तो वास्तविक लोकतन्त्र की जीत है और न विधान सभाई विरोधियो की हार वास्तविक लोकतन्त्र को खतरा है क्योकि वास्तविक लोकतन्त्र क लिए सच्चे जनमत की आवश्यकता होती है। केवल विधान सभाई विरोध से काम नही चलेगा।

राजस्थान की राजनीति न अब तक कांग्रेस के साये म चार राजनतिक नेतत्व देख हैं। हीरालाल शास्त्री टीकाराम पालीवाल जयनारायण व्यास और मोहनलाल सुखाडिया का।

राजस्थान की राजनीति एक नया नेतत्व चाहती है। क्या बरकत वह नया नेतत्व दे सकेगा ? यह प्रश्न बना हुआ है।



बरकत नहीं मिलते

साधारण जनता में राजस्थान के कांग्रेसी नेताओं न मंत्रियों न विधान सभाइयों ने और जरूरतमंद लोगों में रोष है कि बरकत किसी से नही मिलते और मिलने से कतराते हैं। समाज के किसी व्यक्ति में यदि लोगों से न मिलने की और मिलने वालों से कतराने की आदत हो तो उस व्यक्ति की इस असाधारण आदत की ओर उसके परिवार वालों का ध्यान जायेगा और सम्भवतया वे उसे किसी मानसिक चिकित्सक के पास लेजाकर उसका मानसिक इलाज करायेंगे। साधारण समाज का ध्यान उस व्यक्ति की ओर न जायेगा। वह नैसर्गिक भी है। लेकिन जब किसी राज्य के मुख्य मंत्री का स्वभाव लोगों से न मिलना और मिलने वालों से कतराने का हो तो वह स्वभाव जन चर्चा और सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का विषय होता है।

श्री बरकत का लोगों से नहीं मिलने का और मिलने वालों से कतराने का यह स्वभाव मुख्य मंत्री बनने के बाद का नहीं है। यह उनका बहुत पुराना स्वभाव है। वे जब से राजस्थान के मंत्री रहे हैं तब से उनके बारे में जन साधारण में यह व्यंग प्रचलित है कि बरकत 'गुस्ल' में है। बरकत के इस व्यवहार से जनता में अब तक किसी प्रकार का रोष नहीं आ पाया था क्योंकि जिस प्रकार आधुनिक सैनिक युद्ध में थल सेना को वायु संरक्षण मिल जाता है उसी प्रकार बरकत को मंत्री पद काल में मुख्य मंत्री का वायु संरक्षण मिलता रहा है।

श्री बरकत के इस कतराने के स्वभाव का उदात्तिकरण यारों की मंडली' के रूप में हुआ है।

श्री बरकत जब तक कुंआरे रहे तबतक उन्होंने अपने चारों ओर एक छोटा मित्र मंडल बनाये रखा था और इस मित्र मंडल को मशगूल रखने के लिए उन्होंने रमी को आधार बनाया था। श्री बरकत स्वयं इस स्वभाव के प्रति सजग रहे हो या न रहे हो नहीं कहा जा सकता। लेकिन बात ऐसी ही रही है।

श्री बरक्त का जन्म एक सम्पन्न परिवार मे हुआ है। इस पारिवारिक सम्पन्नता के कारण श्री बरक्त को बडे 'लाड और प्यार' मे रखा गया। इस लाड प्यार ने उनके व्यक्तित्व का तरेर दिया। यह तो निश्चित तौर पर नही कहा जा सकता कि बरक्त के इस स्वभाव का पता लोगो को कब लगा लेकिन उन्हें जबसे 'प्यारे मियाँ' के उपनाम मे सम्बोधित किया जाने लगा तब से ऐसा हुआ होगा यह कहा जा सकता है। 'प्यारे मियाँ' के इस नामकरण ने उन के लोगो से न मिलने और मिलने वालो से कतराने के स्वभाव को ढाप लिया। मत्री होने से पहले वे बरक्त के नाम से कम जाने जाते थे, प्यारे मियाँ के नाम से अधिक।

प्यारे मियाँ को बचपन मे माता पिता का जो अगाढ प्यार मिला है उससे उसका स्वभाव सरल लिहाजी और (Self Effacing) सेल्फ इफेसिंग बना हुआ है। यह प्यारे मियाँ की सबसे बडी मानवीय मूल्यो की वसीयत रही है लेकिन यह वसीयत उनकी कतराने की आदत की वेदी पर बलि हो गई है और आज के उनके सामाजिक पद के कारण एक सामाजिक विस्फोट की सम्भाविकता मे योग देने लगी है। बरक्त एक 'बनियन-बालक' रहा है।

सोलह मई की सुबह ! काल मार्क्स के जन्म दिवस के महीने मे आई एक सुबह। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस मई दिवस के बाद आने वाली सबह। इस सुबह को मैं मुख्य मत्री के निवास स्थान पर प्यारे मियाँ के स्वभाव के सामाजिक नतीजे को देखने की दृष्टि से पहुँचा। सुबह के सात बज चुके थे। सिविल लाइन्स मे सन्नाटा छाया हुआ था। सिविल लाइन्स की लम्बी सडक सन्नाटे से ओत प्रोत खाली पडी थी। केवल ठण्डी हवा राहगीर को लोरियाँ देने को तत्पर थी। सुबह की ठण्डी हवा और उगते सूय की गर्मी से मेरी तबियत भुरभुरा उठी। मेरे मन मे विचार आया कि मैं अब अनसिविलाइज्ड क्षेत्र से निकल कर 'सिविल-लाइन्स' में आ गया हू। मुझे आश्चय हुआ कि राजस्थानी समाज और जयपुर शहर इतने बडे व्यग को किस प्रकार सहन कर रहे हैं स्वय जन प्रतिनिधित्व करने वाले मत्री अपने आप को सिविल मान कर दूसरो को असभ्य मान कर कसे सिविल लाइन्स मे चैन की साँस ले रहे हैं। ऐसा केवल विकासशील देश के 'पोमचो राज्य' (Soft state) मे ही हो सकता है।

हवा के ठडे झोंके लेते लेते मैं प्यारे मियाँ के बगले पहुँचा। वहाँ बाहर पटरी पर कई मुसलमान औरतें और मद बठे हुए थे।

बुढ़िया बह रही थी । गुदा की मर्जी स ही सब कुछ होता है । उनकी मर्जी होगी तब बरकत को जबरन्स्ती बरकत करनी पड़गी । पुलिस वाला भी यह समझा रही थी कि गुदा के सामन तुम भी मुझ बरकत स मिलन स नहीं रोक सकत ।

मुख्य मंत्री क बगल के चारों तरफ लटठधारी पुलिस वाल तैनात थ । मैं सीधा बगल म घुस गया । मुझ यहीं किसी न नहीं रोका । मैं हैरान था कि इतने पुलिस वाल यहां क्या हैं ? न तो वहीं कोई जन प्रदर्शन था और न किसी प्रकार के लोगों की भीड़ । मैंने वहीं पुलिस वाला स पूछा तो बताया कि रात म भी इसी तरह का पहरा रहता है । उसन विश्वास क साथ कहा कि राजाओं क समय भी ऐसा ही पहरा रहता था । वहीं मुझ बताया गया कि आठ बज मिलने वाला क लिए दाखिल खुल गया है और वहां कर्मचारी आकर मिलने वालों क नाम की सूचियां तैयार कर लग । इस काम क लिए कर्मचारियों के अलावा एक अफसर भी आयगा जो लोगों की शिकायतों को मुख्य मंत्री तक पहुंचा कर उनका निराकरण करगा । वह भी आठ बज आ जायेगा ।

आठ बजे तक लगभग दो सौ व्यक्ति बरकत स मिलन को एकत्रित हो गय थ । उनम एक वयोवृद्ध सफेद दाढ़ी वाला मुसलमान भी था । उसकी नजर कमजोर थी जिससे वह अपन साथ मदद क लिए एक लड़क को ल आया था । उसन बरकत के पी ए को बताया कि वह बरकत का दोस्त रहा है । आप कम स कम उस मेरे नाम स इतला कर दो । वह स्वयं मुझे बुला लेगा । पी ए न उसे समझाया कि व ऐसा नहीं करेंग । व अपनी शिकायत शिकायती विभाग को दें । उस वृद्ध ने चिल्लाते हुए कहा मुझ कोई शिकायत नहीं है । मैं तो केवल उनसे मिलने आया हूं ।' यह कह कर वह अन्दर जाने लगा । उसको अन्दर जान स खुफिया विभाग क दो व्यक्तियों न यह कह कर रोक दिया कि अन्दर छोटी-बी नाराज हो जायेगी । इस पर बड मियां बड़बड़ान लगे । उनकी बड़बड़ाहट पास म खड़े लोगों के कहकहे म छुप गई ।

इतने म वहां इन्जिनियरिंग पास किए हुए व्यक्तियों का एक समूह चला आया । वे लोग शिकायती अफसर स बात करन लग ।

मैं इन आगन्तुकों से हट कर जानकारी लेने लगा कि क्या बरकत रोज मिलने वाले लोगों स मिल लेता है । मुझ आश्वासन दिया गया कि बरकत रोज लोगों से मिल लेते हैं । मुझे वे यह आश्वासन दे ही रहे थ कि एक

नवयुवक भागता हुआ आया और चिल्ला पड़ा 'साला' भाग रहा है। रोज ही ऐसे भाग जाता है। आज उसे आते हुए पाँच रोज हो गये हैं। मैं हैरत में पड़ गया कि कौन भाग रहा है। पास में खड़े व्यक्ति ने मोटर ड्राइवर से कहा, 'मोटर यहाँ कहाँ ला रहा है पीछे ले जाओ। ड्राइवर नया था। थोड़ी ही देर में उसने गाड़ी पिछवाड़े की तरफ मोड़ ली। मुझे स्थिति समझ में आ गई। बरकत मोटर में बैठ कर पीछे से चुपचाप लोगों से बिना मिले निकल भाग रहा है। बरकत लोगों से बिना मिले मोटर में बैठ कर चला गया।

बरकत के जाने का पता जब लगा तब वहाँ उपस्थित लोगों में एक अनोखे प्रकार की मिश्रित प्रतिक्रिया हुई।

इंजिनियरिंग के विद्यार्थी जो नौकरी की तलाश में आये थे, बरकत के पी ए के कमरे में घुस गये और बरकत मुर्दाबाद और प्यारे मियाँ ! हाय! हाय ! के नारे लगाते हुए यह कहते हुए चले गये कि प्यारे मियाँ कब तक इस तरह बचता रहेगा।

मैं दूर खड़ा यह सब स्थित प्रज्ञ हो कर देख रहा था। मुझे मन ही मन हँसी आ रही थी कि यह सब क्या हो रहा है।

वहाँ जो अधिकांश लोग आये हुए थे वे विभागीय अध्यक्षों से सताये हुए व्यक्ति थे। उनका तबादला मनमाने ढंग से कर दिया गया था। विभागाध्यक्षों के अनुचित कार्यों का खमियाजा राजस्थान के मुख्य मंत्री को उठाना पड़े यह कैसी सामाजिक विडम्बना है। मुझे लगा कि बरकत को चाहिए कि वह ऐसी व्यवस्था करे जिससे उसको उन कारणों का पता लगे जो उसके बंगले पर इतनी बड़ी भीड़ खड़ी कर देते हैं। देखा जाय तो इस प्रकार के आने वाले लोगों की शिकायतें सामाजिक व्यवस्था से बनी मूलभूत शिकायतें नहीं हैं। वे तो शासकीय खुराफातों का प्रतिफल है। शासकीय खुराफाती लोग समस्यायें खड़ी कर और मुख्य मंत्री उनसे कतरा कर भाग जाय यह समुचित नहीं लगता। शिकायती अफसर को चाहिए कि वह मुख्य मंत्री को इस प्रकार की शिकायतों का एक वैज्ञानिक शासकीय अध्ययन प्रस्तुत करे जिससे भविष्य में इस प्रकार की शिकायतें न बन पायें और मुख्य मंत्री का बहुमूल्य समय ऐसी छोटी बातों पर खर्च न करना पड़े। राजस्थान का मुख्य मंत्री उस शिकायती अफसर के इस प्रकार के 'फीड बैक' के आधार पर प्रशासकीय अधिकारियों के व्यवहार में आमूलचूल परिवर्तन लाये।

आज श्री बरकत का आने वालो स न मिलना और मिलने वालों से कतराना एक आम चर्चा का विषय हो गया है। यह लोगो को सुखाड़िया के हँस मुख और मिलन स्वभाव की याद दिला रही है व्यक्ति म यह प्रवृत्ति दा कारणा से होती है – एक वृतिक और दूसरी बौद्धिक। इस प्रवृत्ति का आधार यदि वृत्तिक है तो वह एक मानसिक बीमारी का रूप है। इस प्रवत्ति का आधार यदि बौद्धिक है तो यह बात ध्यान म रखनी होगी कि कहीं उसके अनुचित सामाजिक नतीजे न निकलने लगे। लगता है श्री बरकत के व्यक्तित्व म इस प्रवत्ति के दोना अश विद्यमान हैं। श्री बरकत म मुख्य मत्री बनने के बाद एक प्रकार का ढीठ व्यवहार सामने आ रहा है, जिसका बौद्धिक अवयवी (Organic) आधार राजनतिक है। श्री बरकत का श्रीमती इन्दिरा के विश्वास के कारण यह विश्वास बन गया है कि यदि वह मुख्य मत्री न भी बना रहा तो भी बडी-बी उसे या तो कही राज्यपाल बना देगी या कही ईरान-फिरान मे राजदूत नियुक्त कर देगी और उसकी जिन्दगी इसी माहोल म गुजर जायेगी। इसी विश्वास से रकत की पलायन वृत्त को खुराक मिल रहा है।

राजस्थान आज एक सक्टापन्न स्थिति से गुजर रहा है। उसे मिलने वाला ओवर डाफ्ट ब द हो गया है। विकासशील राजस्थान जिसे पाश्चात्य वनानिको न पोमची–राजस्थान' (Soft Rajasthan) की सना दी है उसे अपनी इस दयनीय अवस्था से बाहर निकालने के लिए भागीरथ प्रयास करना होगा। आशा की जाती है कि इदिरा का अदम्य विश्वास प्यारे मियाँ को जनता का प्यारा बना रह कर खुशहाल समाज की स्थापना म प्रेरणा देगा।

उपसहार

जिस तरह भारतवष म 12वीं शताब्दी स लेकर 19वीं शताब्दी तक एक भी ऐसा बुद्धिजीवि नहीं हुआ है जिसने उस समय की बदलती हुई परिस्थितिया को लिपिवद्ध किया हो इसी प्रकार राजस्थान म आजादी के बाद एक भी ऐसा लेखक और विचारक नहीं हुआ है जिसने इन तेवीस सालों के बारे मे लिखा हो। तबीस सालो का यह युग बौद्धिक दृष्टि स बाँझ युग रहा है। यही कारण रहा है कि सुखाडिया को लेकर ऊपर से आय बहुत् राजनतिक प्रत्युत्पन्नपण की भविष्य वाणी न तो कोई पत्रकार कर सका है न कोइ बुद्धि जीवी कर सका है और न काई राजनीतिन कर सका है।

आजादी के बाद राजस्थान मे जनसख्या के बढ़ने से युग युग से चली आ रही आर्थिक और सामाजिक स्थिति म परिवतन आया है। इस आर्थिक और सामाजिक परिवतन की अग्रवता वतिक रही है। कीटवत्ति ही इस परिवतन की गत्यात्मकता की आधार शिला रही है।

राजस्थान की समूची जन-सख्या को मूलत दो वर्गों मे बाटा जा सकता है। एक तो वह वग है जो जमीन का उपभोग करके पनप रहा है तथा दूसरा वह वग है जो हस्तकला उद्योग, कुटिर उद्योग, यातायात और व्यापार को लेकर अपने को बनाये हुए हैं। इन दो वर्गों का आधिपत्य लगभग राजस्थान की समूची शहरी और ग्रामीण जनता पर बना हुआ है। आजादी के बाद य दो ऊपरी वग अधिक सम्पन्न हुए हैं।

राजस्थान म आजादी के पहले भी राज्य और उसके मत्री रहे हैं राज्य का अपना बजट और उसके वित्तीय काय रहे हैं। राजस्थान म अग्रजों के पदापण और राज्य की कल के हस्तान्तरण के बाद से राज्य के बजट का वित्तीय काय इस प्रकार हुआ है कि उसका लाभ राजाओ और अग्रेजो को हुआ है।

राजपूताना की विभिन्न रियासतो मे ऐसे अलग अलग बजट आग्ल पद्धति पर पारित होते रहे हैं जिसस उन रियासतो म एसे राजनतिक आर्थिक परिवतन हुए जिसस एक ओर अग्रेजो की राजनतिक शक्ति बढी तथा दूसरी ओर जनता को मिलने वाली सुविधा बढी। राजस्थान की रियासतो म इस कथित परिवतन के बावजूद राजाओ और अग्रेजो का राजनतिक वचस्व बना रहा।

आजादी के बाद राजस्थान की विभिन्न रियासतो क एकीकरण क बाद राज्य मत्री मडल और बजट की वित्तीय काय पद्धति आग्ल ससदात्मक पद्धति के अनुरूप रही है। जिस प्रकार इस पद्धति ने इगलड मे राजा को कमजोर बना कर ससद को आवश्यक रूप से बलशाली बनाया ठीक उसी प्रकार राजस्थान मे उसने राजनतिक दलो के महत्व को बढाया है और अन्य राजनैतिक दलो की तुलना मे काग्रेस को सत्ता म बनाये रखा है।

राजस्थान के बजट का रूढ वित्तीय काय वत्तिक आर्थिकता के सदभ म विकसित होता रहा है।

राज्य बजट के रूप वित्तीय कार्यों का आधार परम्परागत प्रशासनिक कार्यों का सचालन करना कानून की व्यवस्था को बनाये रखना और जन उपयोगी कार्यों को निम्न स्तर यह सचालित करना रहा है। लकिन ससार के विभिन्न राज्यो और उनके आय व्ययक के पिछले पच्चहत्तर सालो का लेखा जोखा करें तो पता चलेगा कि राज्य के बजट के वित्तीय-कार्यों म आमूलचूल परिवतन आ गया है और राज्य को बजट ने अपनी पुरानी परम्पराओ को छोड एक नया आधार ढूढ लिया है। उन्होन बजट क वित्तीय कार्यों को नया रूप देकर नई आधुनिकतम तकनीकियों* को बजट का आधार बना लिया है।

इन तकनीकिया के आधार पर बजट का एक वर्षीय बजट क रूप म पारित नही किया जाता है और न ही ऐतिहासिक शास्त्रीय वित्तीय-तरीका और परम्परानुगत वही-खाता पद्धति पर चलाया जाता है। बजट का आज वास्तविक और सही काय समाज क आर्थिक-स्रोत को प्रस्तुत करन का होना

---

* वे तकनीकियाँ है।

1 द प्रोग्राम एनेलिसिस एण्ड रिव्यू तकनीक।

2 द प्लानिंग प्रोग्राम बजट सिस्टम।

3 द पर्फॉरमेन्स एडमिनिस्टर मर्बे सिस्टम।

चाहिए और उसी सन्दर्भ में उद्देश्य की प्राप्ति और कार्य निपुणता को आंका जाना चाहिए। सही समय पर प्रस्तुत किये गये उपयुक्त आंकड़े एवं प्रगतिशील सामाजिक-परिवर्तन और खुशहाल समाज को प्रतिपादित कर सकेंगे। लेकिन राजस्थान में ऐसा कुछ नहीं हो पाया है।

राजस्थान में जो आय व्यय (बजट) एक वर्षीय तौर पर पारित किया जाता है उसका सीधा नतीजा राजकीय विभागों को खर्च करने की योग्यता देने तक ही सीमित रहा है। उद्देश्यों की प्राप्ति पर उनका ध्यान नहीं रहा है।

सुखाड़िया के समूचे कार्य काल में प्रशासन इस राहत-बजट की आय का खर्च करने में ही दक्षता प्राप्त नहीं की वरन् उसे भस्मासुर दैत्य की तरह इस दक्षता से बढ़ाया है जिससे एक ओर राजस्थान पर 92 करोड़ का ओवर ड्राफ्ट काली छाया की तरह मंडराने लगा है तो दूसरी ओर समाज में भ्रष्टाचार, विषमता, बेकारी विघटन और ह्रास दीमक की तरह खा गया है। यदि श्रीमती इन्दिरा गांधी ऊपर से राजनैतिक प्रत्युत्क्षेपण (Political Coup d etat) नहीं करती तो राजस्थान की "संस्कृति और सभ्यता मनुष्य को पूरी तरह खा जाती।

श्री बरकत उल्ला खाँ को राज्य और बजट की जो शास्त्रीय और रूढ़ विरासत मिली है नये समाज के निर्माण के लिए ऊपर उठना पड़ेगा। जिन अंशों में बरकत ऐसा कर पायेंगे उन्हीं अंशों में उन्हें सामाजिक सफलता मिलेगी।

